卐 श्री वीतरागाय नमः 卐

विशद

श्री रक्षाबन्धन विधान

माण्डला

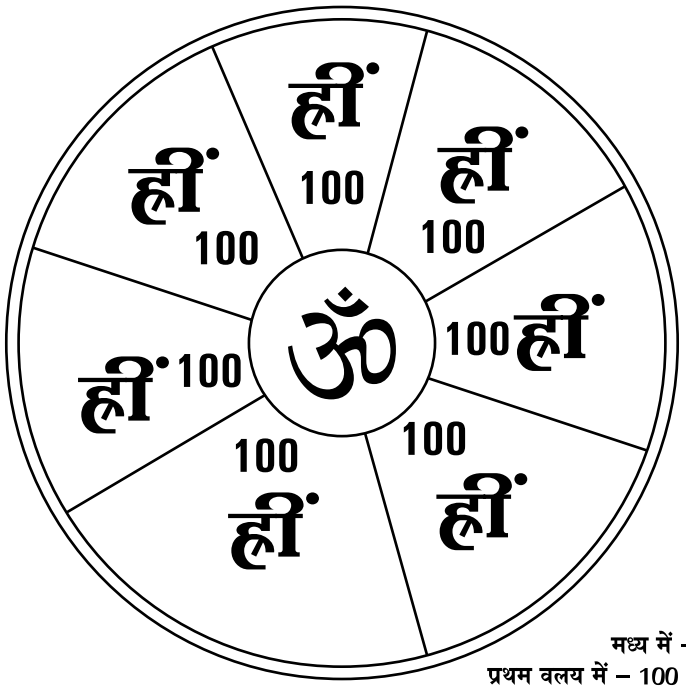

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 100 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 100 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 100 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 100 अर्घ्य
पंचम वलय में – 100 अर्घ्य
षष्ठम् वलय में – 100 अर्घ्य
सप्तम् वलय में – 100 अर्घ्य
कुल 700 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति	:	**विशद श्री रक्षाबन्धन विधान**
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम-2018 प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी ऐलक श्री विदक्ष सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085 ब्र. आस्था दीदी 9660996425, ब्र. सपना दीदी 9829127533
संयोजन	:	ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी
कम्पोजिंग	:	ब्र. आरती दीदी 8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017 2. विशद साधना केन्द्र नैनवा, 9214408656 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879 4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली मो. 09818115971, 09136248971
मूल्य	:	35/- रु. मात्र

मुद्रक : **पारस प्रकाशन,** दिल्ली. मो.: 9811374961, 9811363613
ईमेल : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

अर्चन के सुमन

संसार दु:खों का समूह है। दु:खों से बचने के लिए प्राणी हमेषा प्रयत्नषील रहता है। यह प्रयत्न कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल होते हैं। अनुकूल अर्थात् सम्यक् प्रयत्न ही दु:ख दूर करने में समर्थ होते हैं। दु:खों का अंतरंगकारण हमारी राग-द्वेष रूप परिणति है एवं बाह्य कारण कर्मोदय है। कर्मोदय के अनुसार अनुकूल-प्रतिकूल निमित्त मिलते रहते हैं और जीव दु:ख का वेदन करता रहता है इसलिए कवि ने लिखा है-

संसार में सुख सर्वदा काहूँ को न दीखे।
कोई तन दुखी, कोई मन दुखी, कोई धन दुखी दीखे॥

ऐसी स्थिति में लोगों को जिनधर्म से जुड़कर देव-शास्त्र-गुरु की पूजा, आराधना ही सर्वोपरि है। पुण्य संचय हो और इंसान सुखी और समृद्ध हो एवं सम्यक्त्व को प्राप्त कर परम्परा से रत्नत्रय का आराधन कर मोक्ष प्राप्त कर सके। इस हेतु चिंतन के बिखरे पुष्पों को समेटकर चित्त को चौतन्यता की ओर ले जाने के लिए ज्ञानवारिधि गुरुवर श्री विशदसागर जी महाराज ने 'विशद रक्षाबन्धन महामण्डल विधान' के माधयम से षब्द पुंजों को सरल भाषा में संचित किया है। क्योंकि कहते है कि-

प्रभु भक्ति से नूर मिलता है।
गमे दिल को सरूर मिलता है॥
जो आता है सच्चे मन से द्वार पर।
उसे कुछ न कुछ जरुर मिलता है॥

आचार्य श्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुखमुद्रा प्राय: सभी का मन मोह लेती है। आचार्य श्री के कण्ठ में साक्षात् सरस्वती का निवास है। इसे भगवान का वरदान कहें या पूर्व पुण्योदय समझ में

नहीं आता। आचार्य श्री को पाकर सारी जैन समाज गौरवान्वित है। आचार्य श्री के द्वारा अब तक 185 विधानों की रचना की जा चुकी है। आचार्य श्री का गुणगान करना तो कदाचित् संभव ही नहीं है। गुरुवर के चरणों में अंतिम यही भावना है कि-

जिनका दर्शन भवि जीवों में, सत् श्रद्धान जगाता हैं।
उपदेशामृत जिनका जग में, सद्धर्म की राह दिखाता है॥
उन विशद सिन्धु के श्री चरणों में, सादर शीष झुकाते हैं।
हम चले आपके कदमों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥

-ब्र. आरती दीदी

(संघस्थ आ. विशदसागर जी महाराज)

रक्षाबन्धन कथा

(वात्सल्य का पर्व)

-साहित्यरत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी

आज का पर्व सन्तों के ऊपर वात्सल्य भाव का पर्व है। 'आज का यह पर्व मुक्ति पर्व है, हरीतिमा का पर्व है, धर्मरक्षा का पर्व है, खुशहाली का पर्व है, भाईचारे का पर्व है, सौहार्द्र का पर्व है, मानमर्दन का पर्व है, रक्षा की षिक्षा का पर्व है, प्रकाश का प्रेरक पर्व है। जोड़ने वाला पर्व है, वात्सल्य, स्नेह, प्रेम का पर्व है।

इस पर्व का प्रारंभ भगवान वासुपूज्य के समय से हुआ। संसार के अन्दर उतार-चढ़ाव होते हैं। विष्णुकुमार मुनि का नाम सभी जानते हैं। आपने कई बार कथा पढ़ी होगी। उज्जैन नगर में श्रीवर्मा नामक राजा राज्य करता था। उसके चार मंत्री बलि, प्रहलाद, नमुचि, बृहस्पति थे। चारों मंत्री राजा के नजदीकी थे, मंत्री बहुत विद्वान् थे। किन्तु सबसे बड़ी कमी थी कि वह जिनधर्म से हीन थे और अहंकारी थे।

अकंपनाचार्य 700 मुनियों सहित उज्जैनी नगर में पधरे। अकंपनाचार्य मुनिराज निमित्त ज्ञानी थे। उन्होंने किसी निमित्त को देखकर अपने ज्ञान से जान लिया कि कुछ अशुभ होने वाला है। इसलिए अकंपनाचार्य ने समस्त संघ को आदेश दिया कि राजादिक के आने पर किसी के साथ वार्तालाप न किया जावे अन्यथा अनर्थ हो जाएगा। समस्त संघ का विनाष हो जाएगा और सभी को मौन रहने का आदेश दिया। श्रुतसागर मुनि लघुषंका की बाध आने से बाहर गये थे। श्रुतसागर मुनि आदेश नहीं सुन पाए थे। राजा श्रीवर्मा ने जाकर देखा, पूरा का पूरा संघ मौन है, नमोस्तु किया, आशीर्वाद भी नहीं मिला। राजा ने आचार्य श्री को नमोस्तु किया और कुछ प्रश्न किये किन्तु आचार्य श्री भी मौन रहे। मंत्री मिथ्यादृष्टि थे। राजाज्ञा से दर्शनार्थ आये थे। मंत्री दुष्ट भाव से कहने लगे-राजन्, इन मुनियों को कुछ ज्ञान नहीं है। इसलिए ये मौन रहने का ढोंग कर रहे हैं (क्योंकि

'मौनं मूर्खस्य लक्षणम्' मौन रहना मूर्खों का लक्षण है। जो मूर्ख अज्ञानी होते हैं, ज्ञान न होने से मौन रहते हैं। मंत्री ने कहा-राजन्! आपके जैसे महान् महापुरुष के आने पर भी आशीष नहीं दिया, ये आपका बड़ा अपमान है।

सांसारिक कार्यों में कर्म बाँधते हैं, उन्हें धर्मस्थल पर धो लेते हैं। किन्तु धर्मस्थल पर बंधे कर्म कहाँ धुलेंगे?

साधु के ऊपर तलवार जो पहले उठायेगा उसे कर्म का बंध होगा। क्रोध और मान धक्का लगा रहा है (किन्तु उनके हाथ पीछे हट रहे हैं। चारों ने सलाह की और एक साथ तलवार चलाई। उसी समय उस स्थान के रक्षकदेव का आसन कम्पायमान हुआ। उसने उन सबको उसी अवस्था में कीलित कर दिया। जब-जब किसी संत और भगवन्त पर उपसर्ग होता है तो अवश्य ही कोई भक्त आकर उपसर्ग दूर कर दुष्टों को दण्ड देते हैं। प्रातः काल सब लोगों ने उन मंत्रियों को उसी प्रकार कीलित तथा श्रुतसागर मुनि को ध्यानावस्था में अवस्थित देखा। मंत्रियों की कुचेष्टा से राजा बहुत क्रुद्ध हुआ। परन्तु ये मंत्री वंया परम्परा से चले आ रहे हैं। यह विचारकर उन्हें मृत्यु दण्ड तो नहीं सिर्फ गर्दभारोहण। कर मुँह काला करके देश से निकाल दिया।

तदन्तर कुरुजागंल देश के हस्तिनापुर नगर में राजा महापद्म राज्य करते थे। उसकी रानी का नाम लक्ष्मीमति था। उनके दो पुत्र थे-पद्म और विष्णु। एक समय राजा महापद्म, पद्मनामक पुत्र को राज्य देकर विष्णु नामक पुत्र के साथ श्रुतसागर चन्द्र नामक आचार्य के पास मुनि हो गये। वे बलि आदिक मंत्री यहाँ आकर पद्मराजा के मंत्री बन गये। उसी समय कुमपुर के दुर्ग में राजा सिंहबल रहता था। राजा पद्म उसे पकड़ने की चिंता में दुर्बल होता जा रहा था। उसे दुर्बल देखकर एक दिन बलि ने कहा कि 'हे देव!दुर्बलता का क्या कारण है?'राजा ने उसे दुर्बलता का कारण बताया कि राजा सिंहबल हमारे राज्य पर आक्रमण करता है, हम उसे जीवित नहीं पकड़ पा रहे हैं। यह बात सुनकर तथा आज्ञा प्राप्तकर

बलि आदि मंत्री वहाँ गये और अपनी बुद्धि के माहात्म्य से दुर्ग को तोड़कर राजा सिंहबल को बन्दी बनाकर वापस आ गये और उन्होंने सिंहबल राजा पद्म को सौंप दिया। राजा पद्म ने खुश होकर मंत्रियों से कहा-'तुम अपना वाँछित वर माँगो, जो माँगोगे तुम्हें दिया जाएगा ('किन्तु मंत्री बहुत चतुर थे। बलि ने कहा-जब आवष्यकता पड़ेगी तब हम वर माँग लेंगे।

राजा ने मंत्रियों से कहा-बोलो, क्या चाहते हो? दुष्ट मंत्री ने कहा-हम सात दिन का राज्य चाहते हैं। तदन्तर राजा पद्म सात दिन का राज्य देकर अन्तःपुर में चला गया। इधर मंत्री ने आतापगिर पर कायोत्सर्ग से खड़े हुए मुनियों को बाड़ी से वेष्टित कर यज्ञ करना शुरू कर दिया। उस यज्ञ में जूठे सकोरे, कचरा, माँस, बकरा आदि पषुओं का कलेवर तथा धूप आदि के द्वारा मुनियों को मारने के लिए बहुत भारी उपसर्ग किया। मुनि सन्यास लेकर नियम सल्लेखना में स्थिर हो गये।

प्यारे बन्धुओ! मुनियों के ऊपर उपसर्ग हो रहा है (किन्तु राजा को कोई खबर नहीं। मिथिलागिरी में आधी रात के समय बाहर निकले हुए श्रुतसागर चन्द्र आचार्य ने आकाष में काँपते हुए श्रावण नक्षत्र को देखा तो मुँह से निकला-' ओह! महामुनियों पर उपसर्ग हो रहा है।' यद्यपि साधुजन रात्रि में मौन रहते हैं (किन्तु इस स्थिति को देखकर बोल पड़े। पास ही बैठे पुष्पधर नामक विद्याधर क्षुल्लक ने पूछा कि कहाँ, किस पर घोर उपर्सग हो रहा है?उन्होंने कहा कि 'हस्तिनापुर में अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों पर उपर्सग हो रहा है।' यह उपसर्ग कैसे दूर हो सकता है?क्षुल्लक द्वारा पूछे जाने पर कहा कि 'धरणिभूषण पर्वत पर विक्रिया ऋद्धि के धरक विष्णुकुमार मुनि स्थित हैं, वे उपसर्ग दूर कर सकते हैं। 'उनको तपस्या के प्रभाव से विक्रिया ऋद्धि प्राप्त हुई है (किन्तु उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं है। ऐसा सुनकर क्षुल्लक उनके पास गये और सब समाचार कह सुनाया। उन्होंने अपना हाथ फैलाकर देखा तो हाथ सुमेरु पर्वत तक पहुँच गया। तब ज्ञात हुआ कि ऋद्धि प्राप्त हो चुकी है। प्यारे बन्धु! इससे साधुओं की निष्पृहता ज्ञात होती है।

छह दिन तक क्रम-क्रम से यज्ञ होता रहा। साधुओं पर उपसर्ग हो रहा है। राजा वचनब) था (क्योंकि सात दिन का राज्य और साथ में अभयदान भी दिया था। विक्रिया का निर्णय कर मुनि विष्णुकुमार ने हस्तिनापुर जाकर राजा पद्म ने लज्जित होकर कहा-'क्या करूँ मैंने पहले इन्हें वरदान दे दिया था।'

पश्चात् विष्णुकुमार मुनि बटुक का भेष बनाकर यज्ञस्थल में आये और उत्तम शब्दों द्वारा वेद पाठ शुरु कर दिया। पश्चात् 'भिक्षाम् देहि-2' की आवाज लगाई। बौने ब्राह्मण ने कहा- हमें ज्यादा नहीं बस तीन पग भूमि दे दो। मंत्री ने कहा- ब्राह्मण तुम मकान माँग लो, वस्त्र आादि माँग लो। तीन पग भूमि में तो तुम ठीक से बैठ भी नहीं पाओगे। तब बटुक ब्राह्मण ने कहा- देते हो कि नहीं अन्यथा मैं चला। तब मंत्री ने कहा- अच्छा तुम्हें तीन पग भूमि देता हूँ। ब्राह्मण ने कहा-राजा हमको विष्वास नहीं है कि तुम वचन का पालन करोगे। सिर पर कलष लेकर अग्नि की साक्षी में प्रतिज्ञा करो कि तीान पग भूमि मुझे दोगे। राजा ने प्रतिज्ञा की, हम वचन का पालन करेंगे। तब बटुक ने अपनी विक्रिया फैलाना प्रारम्भ की एक पैर सुमेरु पर्वत पर रखा और दूसरा पैर मानुषोत्तर पर्वत पर रखा (किन्तु तीसरा पैर कहाँ रखा जाए पूँछने पर लज्जित मंत्री चरणों में झुक जाते हैं। अब तीसरा कदम मेरी पीठ पर रख दीजिए भगवन! मंत्रियों ने ऐसा कहा। प्यारे बन्धुओ! विष्णुकुमार मुनि के अन्दर कितना वात्सल्य था कि साधु और धर्म के प्रति अपनी जीवन भर की साधना को दाव पर लगा दिया। उस समय धर्म की रक्षा की थी (किन्तु वर्तमान में कतिपय साधुओं के द्वारा ऐसा उपदेश दिया जाता है कि नगर में साधु आये, पहले उसकी परीक्षा करो, उसे खोजो फिर आहार दो। क्या विष्णुकुमार मुनि ने भी उसकी परीक्षा की, बाद में उपसर्ग टाला था? नहीं न। मुनिराज ने पीठ पर पैर नहीं रखा जो चरणों में झुक गया, उसे गले से लगा लिया था, उसे आशीर्वाद दिया। मंत्री के जीवन में अमूल्क परिवर्तन हुआ। वे चारों मंत्री जैनधर्म के अनुयायी हो गये।

मुनिराज विष्णुकुमार ने वात्सल्य का परिचय दिया। सात दिन के बाद आज का दिन रक्षाबंधन का दिन बन गया था। हे भव्य आत्माओ! कषायरूपी शत्रुओं पर तुम्हें विजय प्राप्त करना है। तभी तुम्हारा रक्षाबंधन मनाना सार्थक होगा। आचार्य संघ सहित सात सौ मुनि उपसर्ग दूर होने पर शरीर से शिथिल हो चुके थे। लोगों के आग्रह पर आहारचर्या पर निकलते हैं। जिनके घर पर आहार हुए वे श्रावक धन्य हैं। बाकी श्रावक क्या करें तो उन्होंने एक-दूसरे को अपने घर में आहार कराया और आपस में रक्षासूत्र बाँधा था और ये संकल्प किया था कि धर्म की रक्षा के लिए आगे आएँगे।

मंगलाष्टक (भाषा)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी॥
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥1॥
नमित सुरासर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान॥
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥2॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी॥
जिन आगम जिनचैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥3॥
तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबीस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव॥
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥4॥
जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव॥
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी॥5॥
सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार॥
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥6॥
आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी॥
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।

सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥7॥
व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार॥
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥8॥
तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में॥
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥9॥
धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा॥
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी॥10॥

॥इति मंगलाष्टक॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत॥

पञ्चाचार परायणाः सुमुनयः रत्नत्रयाराधकाः।
द्वादश तप त्रय गुप्ति गोपन पराः दश धर्म संराधकाः॥
समता वन्दन स्तुति प्रतिक्रमण, स्वाध्याय ध्यानः पराः।
आचार्यां त्रय लोक पूजित पदं, वन्दे विशदसागरम्॥

प्रतिष्ठा विधि

हस्त शुद्धि-ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रच्छालनं करोमि स्वाहा।
अमृत शुद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय-स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

जल शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता

सीता सीतोदा नारी नरकान्त सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

दिग्बंधन

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः ऊर्ध्वलोक, अधो लोक मध्यलोक समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।)

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र

ॐ नमोंऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते भवतु। (यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगावें।)

अंगन्यास विधि

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम गात्रे रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

मण्डप प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ऐतेषां पात्रशुद्धिं सर्वांगशुद्धिः भवतु।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः नमोर्हते श्रीमते पवित्रर जलेन मण्डप शुद्धि करोमि स्वाहा। (मण्डप पर जल से शुद्धि करें)

भो चतुर्णिकाय देवाः! स्वथाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोगं कुरु कुरु स्वाहा।

भो! पूर्व दिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने ----

भो! दक्षिण दिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने ----

भो! पश्चिम दिशा ..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने ----

भो! उत्तर दिशा ..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने ----

भो! वास्तु कुमार देवाः मेघकुमार वातकुमार देवाः, अग्नि कुमार देवाः, नाग कुमार देवाः स्वस्थाने ----

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः जिन मण्डप स्थले धरित्री जाग्रते अवस्थायां कुरु कुरु स्वाहा।

भो! क्षेत्रपाल देवः स्वथाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोगं कुरु कुरु स्वाहा।

भो! धनद रत्न वृष्टिं कुरु कुरु

रक्षा मन्त्र–ॐनमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

शांति मंत्र–ॐ क्षूं हूं फट् किरीटिं घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय, सहस्रखण्डान् कुरु, परमुद्रां छिन्द- छिन्द, परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द, क्षां क्षः फट् स्वाहा

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्तवाभमनेकमेकम्।
तेनत्रिवारे परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्र॥

मन्त्रः–ॐ अनादिपरब्रहम्णे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमः। ॐचतुर्मंगलाय नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ चतुः शरणायन नमो नमः---अस्य विधान --- नामधेयं यजमानस्य श्री ---यजमानस्य

सपरिवारे वर्धस्व-2 विजस्य -2 भवतु-2 सर्वदा शिवं कुरु।

कलश में सामग्री एवं श्रीफल रखने का मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं पूंगी फलानि प्रभृति वस्तुनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री (विधान) महामण्डल विधान कार्यं। ...श्री वीर निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्धयर्थं, पात्रशुद्धयर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं ह्रवीं ह्रवीं हं सः स्वाहा।

दीपक स्थापना

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोंण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापना

अरहंत-भासियत्थं गणहर-देवेहिंगंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाण-महोवहिंसिरसा॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोदभूत रत्नत्रय स्वरूप जिन शास्त्र स्थापयामि स्वाहा।

पात्र शुद्धि

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धिं करोमि स्वाहा।

पंचामृत अभिषेक पाठ

(शम्भू छन्द)

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार॥
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन॥1॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीमत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन॥
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण॥2॥

ॐ नमो परम शान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरुपं यज्ञोपवीत धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ह्रीं नमः स्वाहा।

तिलक लगाने का मंत्र

हे विबुधेश्वर! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ॥
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण॥3॥

ॐ ह्रीं नवांग तिलकं अवधारयामि स्वाहा।

भू प्रच्छालन मंत्र

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव॥
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतू संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृतजल से प्रच्छालन॥4॥

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

पीठ प्रच्छालन मंत्र

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर॥

जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार॥5॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री कारलेखन मंत्र

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार॥
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार॥6॥

ॐ ह्रीं पाण्डुकशिला पीठे श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा।

अग्नि प्रज्ज्वलन क्रिया

दोहा- मोह रूप वन दहन में, पावन रहे समर्थ।
अग्नि प्रज्ज्वलन कर रहे, हम पूजा के अर्थ॥7॥

ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा।

दश दिग्पाल आह्वान

इन्द्र अग्नि यम नैऋत पावन, वरुण पवन कुबेरैशान।
धरणेन्द्र सोम सभी जिनवर का, करो न्हवन तुम महति महान॥
अपने-अपने अनुचर सारे, अपने सब चिन्हों के साथ।
करो भेंट स्वीकार यहाँ सब, जिन पद आप झुका कर माथ॥8॥

दशदिक्पाल के मंत्र

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ-आगच्छ इन्द्राय स्वाहा॥1॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ-आगच्छ आग्नेय स्वाहा॥2॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ-आगच्छ यमाय स्वाहा॥3॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत्य आगच्छ-आगच्छ नैऋताय स्वाहा॥4॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ-आगच्छ वरुणाय स्वाहा॥5॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ-आगच्छ पवनाय स्वाहा॥6॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ-आगच्छ कुबेराय स्वाहा॥7॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ-आगच्छ ऐशानाय स्वाहा॥8॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेन्द्र आगच्छ-आगच्छ धरणेन्द्राय स्वाहा॥9॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ-आगच्छ सोमाय स्वाहा॥10॥

दशदिक्पालों का अर्घ्य

तीन लोक के नाथ कहे जो, केवलज्ञानी महति महान।
दस प्रकार के धर्म की वृष्टी, तीन लोक में करें प्रधान॥
गुण रत्नों के कहे महार्णव, जिनपद चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
'विशद' कुसुम अक्षत आदिक का, अर्घ्य चढ़ा पद पाओ अनर्घ्य॥9॥

ॐ ह्रीं इन्द्रादि दशदिग्पालेभ्यो इदं अर्घ्यं पाद्यं दीपं धूपं चरुं बलि स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृहतां प्रति गृहतां स्वाहा।

क्षेत्रपाल का अर्घ्य

भो! क्षेत्रपाल हो रक्षपाल, तुम जिन शासन के महति महान।
गुण चन्दन तेलादि धूप ले, वसु द्रव्य से करते सम्मान॥
यज्ञ भाग ले करें अर्चना, श्री जिनेन्द्र का मंगलगान।
जिनाभिषेक पूजा विधान में, आके पाओ निज स्थान॥10॥

ॐ आं क्रों अत्रस्थ विजयभद्रादि पञ्च क्षेत्रपाल इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं चरूं वलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजा महे प्रतिग्रहतां-प्रतिग्रहतामीति स्वाहा।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

जिनबिम्ब स्थापन मंत्र

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्॥
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

अर्घ्य

निर्मल जल परिमल चंदन अरु, श्री को सुखकर ले अक्षत।
श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प सु चरू शुभ, शुद्ध बनाए अमृतवत्॥
सुर भवनों को करें प्रकाशित, ऐसे लेकर दीप महान।
श्रेष्ठ सुगन्धित धूप और फल, से जिन का करते गुणगान॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वर्णे जिनबिम्ब स्थापना करोमि अर्घ्यं निर्व.

(चारों दिशा में चार कलश स्थापन मंत्र)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्॥

चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।12।।
ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्।।14।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय।।
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो जलेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इक्षुरसाभिषेक

इन्द्र अञ्जली बद्ध शीश पर, रख के अपने दोनों हाथ।
श्री जिनेन्द्र के चरण झुकाते, भक्ति भाव से अपना माथ।।
तुरत पेलकर इच्छूरस से, शीश पे देते हे प्रभु! धार।
नाथ! आप हो करुणाकारी, करो सभी का प्रभु उद्धार।।15।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरइक्षुरसेन जिनाभिषेचयामिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो इक्षु रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शर्करा रसाभिषेक

रजो विलाश कर्पूर पिष्ट शुभ, मधुर शर्करा रस शुभकार।
मोक्षरमा के स्वामी जिन के, शीश पे देते पावनधार।।

मन वाञ्छित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भक्ति अपार।
जिन चरणों में भक्त स्वतः ही, फल पाते हैं विस्मयकार।।
ॐ ह्रीं...शर्करा रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय।।
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो शर्करा रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नारियल रसाभिषेक

स्वच्छ नारियल का जल शीतल, जो पवित्र है शुभ मनहार।
लोकालोक प्रकाशी जिनका, न्हवन कराते मंगलकार।।
ॐ ह्रीं...नारियल रसेन जिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय।।
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो नारियल रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दाड़िम रसाभिषेक

दाड़िम के दाने मोती सम, श्रेष्ठ पक्व लेकर मनहार।
तुरत पेलकर रस ले पावन, न्हवन कराते अतिशयकार।।
ॐ ह्रीं...दाड़िम रसेनजिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय।।
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दाड़िम रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आम्र रसाभिषेक

पके आम का रस ले मीठा, शोभित होवे स्वर्ण समान।
श्री जिनेन्द्र के शीश पे देते, जिसकी धारा महति महान।।
ॐ ह्रीं...आम्र रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद", पावन अर्घ्य चढ़ाय।।
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फल रसाभिषेक

वीतराग जिन बिम्ब मनोहर, तीन लोक में मंगलकार।
पक्व...के रस द्वारा, देते जिन के शीश पे धार।।

ॐ ह्रीं...रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद", पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घृताभिषेक

श्रेष्ठ वर्ण कंचन सम सुन्दर, देह प्रभा जिनकी शुभकार।
अनुपमेय गुण रहे मनोहर, अर्हन्तों के मंगलकार।।
नमस्कार कर शीश पे देते, हैं हम जिन के घृत की धार।
परम सुगन्धी वाला होता, वातावरण श्रेष्ठ मनहार।।16।।

ॐ ह्रीं.....घृताभिषेकं करोमिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो घृताभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुग्धाभिषेक

पूर्ण चन्द्रमा की किरणों सम, धवल दुग्ध से देते धार।
जिनके यश की गौरव गरिमा, फैल रही है अतिशयकार।।
कल्पवृक्ष समनाथ! आप हैं, भवि जीवों को फल दातार।
अतः आपके चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार।।17।।

ॐ ह्रीं.....दुग्धाभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दुग्धाभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दध्याभिषेक

क्षीर सिन्धु से उठी तरंगें, फैन राशि सम आभावान।
उससे सुन्दर दधि की धारा, शीश पे जिन के करें महान।।

मन वाञ्छित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भक्ति अपार।
जिन चरणों में भक्त स्वतः ही, फल पाते हैं विस्मयकार।।18।।

ॐ ह्रीं..... दध्याभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दध्याभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वौषधिअभिषेक

दही दूध घृत इच्छूरस से, जिनवर का करके अभिषेक।
उबटन करकालेय सुकुंकुम, सर्व मिलाकर करके एक।।
मिश्रित कर उज्जवल सर्वौषधि, से धारा देते जिनशीश।
शीश झुकाकर वन्दन करते, पाने को हम भी आशीष।।19।।

ॐ ह्रीं....सर्वौषधि जिनाभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सर्वौषधिअभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे....देशे....नाम.....नगरे.....एतद्..... .....जिनचैत्यालये वीर नि. सं..... मासोत्तममासे....मासे....पक्षे....तिथौ.....वासरे प्रशस्त ग्रहलग्र होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक- श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं चतुःकलशेन जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पूर्णसुगंधितकलाशाभिषेकेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सुगंधित कलश अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्दन लेपन

तीन लोक में पुण्य प्रदायक, चन्दन को केसर में गार।
करते हैं जिनबिम्बों में हम, श्रेष्ठ विलेपन मंगलकार।।
निज गुण पाने का जागे अब, हे जिनेन्द्र मेरा सौभाग्य।
नाथ! आपके गुण सौरभ से, विशद जगाए हम भी भाग्य।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि चन्दन विलेपनं करोमि स्वाहा।

पुष्पवृष्टि

द्वादश योजन तक सुगन्ध जो, फैलाते हैं पुष्प पराग।
पुष्प वृष्टि करते हैं पावन, जिन चरणों में धर अनुराग।।
मोक्ष मार्ग की सिद्धी पाने, करें भाव से हे प्रभु! ध्यान।
'विशद' भाव से नाथ! आपका, करते हैं पावन गुणगान।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि पुष्प वृष्टिं करोमि स्वाहा।

ऋषिमण्डल यंत्राभिषेक

ऋषीमण्डल शुभ यंत्र का, करते शुभ अभिषेक।
रोग शोक सब दूर हो, जागे विशद विवेक।।

ॐ ह्रीं पवित्रतर जलेन ऋषिमण्डल यंत्र अभिषेकं करोमि इति स्वाहा।

मंगल आरती अवतरण

रखे पात्र में श्री फल उज्ज्वल, अक्षत पुष्प मनोहर दीप।
इत्यादिक से सज्जित थाली, मंगलमय हम लाए समीप।।
काम दाह के नाशक हे जिन, सर्व सुखों के तुम आलय।
'विशद' आरती करते हैं हम, आके अनुपम देवालय।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्परमेष्ठिने नमः मंगल आरती अवतरणम् करोमि स्वाहा।

गंधोदक

जिनाभिषेक का गंधोदक शुभ, मुक्ति श्री के उदक समान।
पुण्यांकुर उत्पन्न करे जो, सुर नरेन्द्र सब वैभववान।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण की, लता की वृद्धी का कारण।
कीर्ति लक्ष्मी जय का साधक, 'विशद' रहा जो निस्कारण।।25।।

मस्तकोपरि गंधोदक धारयामि इति स्वाहा।

अभिषेक समय की स्तुति

(तर्ज-करले जिनवर का गुणगान आई मंगल घड़ी...)

करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।
आई सारी नगरी, झूमे जनता सगरी।।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।1।।
प्रासुक करके जल भर लाए, सिर के ऊपर ढारे।
करते हम अभिषेक प्रभु का, जागे भाग्य हमारे।।
सिर पर रखकर लाए भक्त, देखो जल गगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।2।।
पाण्डुक शिला पे जिन प्रतिमा को, भाव सहित पधराए।
चार कलश चारों कोंणों पर, जल भरकर रखवाए।।
खुशियाँ छाईं चारों ओर, हमारी नगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।3।।

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं अस्माकं-छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **मृत्यु** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **अतिकामं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **रतिकामं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **क्रोधं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **अग्निभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वशत्रुं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वविघ्नं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वराजभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वचौरभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वदुष्टभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमृगभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वात्मचक्रभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपरमंत्र** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वशूल रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वक्षय रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वकुष्ठ रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वक्रूर रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वनरमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगजमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वाश्वमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगोमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमहिषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वधान्यमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववृक्षमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगुल्ममारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपत्रमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपुष्पमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वफलमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वराष्ट्र मारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व देशमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व विषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववेताल शाकिनी** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववेदनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमोहनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वकर्माष्टकं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु। सर्व जनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व भव्यानंदनं कुरु-कुरु। सर्व गाकुलानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं कुरु-कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्री शांति-मस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्र-ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव मम सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां॥
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः॥
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं॥
अर्घ-जल गंधाक्षत पुष्पचरु फल, दीप धूप का अर्घ्य बनाय।
'विशद'भाव से शांति धार दे, श्री जिनपद में दिया चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मूलनायक सहित समुच्चय अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धि पाने, तव चरणों में आए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरु, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव-शास्त्र-गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमा कृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री..... सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्व साधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिन चैत्यालय, रत्नत्रय-दशलक्षण-सोलहकारण-त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय कैलाश गिरि-सम्मेद शिखर-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थंकर; विद्यमान बीस तीर्थंकर, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व आचार्य परमेष्ठी अर्घ्य

पूर्वाचार्यश्री शांति सागर जी, आदिसागराचार्यप्रवर।
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर
भरत सिन्धु कुन्थुसागर जी, विद्यानन्द विद्यासागर।
पुष्पदन्त गुरु विराग सिन्धुपद, वन्दन मेरा विशद सादर।

ॐ ह्रूँ सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री का अर्घ

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है....)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।।टेक॥
दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।1॥
जिनवर...
मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं।।2॥
जिनवर...
शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।3॥
जिनवर...
हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।।4॥
जिनवर...
नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, दर शीश झुकाते हैं।।5॥
जिनवर का....!

लघु विनय पाठ

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4॥

भवि जन को भव-सिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हो नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।

सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्पचरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ!।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीं द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।
ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ मैं भी गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्वजिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।

विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरहमल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान॥
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण॥1॥
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥

॥ इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

स्तवन

दोहा- श्री अकम्पनाचार्य जी, मुनिवर विष्णु कुमार।
के निमित्त वात्सल्य का, चला श्रेष्ठ त्योहार॥

(ज्ञानोदय छन्द)

देव शास्त्र गुरु पूज्य लोक में, जैनागम जिन धर्म महान।
जिन चौत्यालय चौत्य हमारे, जिनका हम करते गुणगान॥
भरतैरावत में त्रैकालिक, तीर्थंकर हैं गुण की खान।
शाश्वत रहें विदेह क्षेत्र में, प्राप्त करें सब पद निर्वाण॥1॥
लोकालोक के मधय में भाई, जम्बूद्वीप है मंगलकार।
जम्बू वृक्ष के कारण जिसका, नाम पड़ा है अतिशयकार॥
जिसके भरत क्षेत्र में पावन, आर्य खण्ड में भारत देश।
नगर हस्तिनापुर है जिसमें, जिसकी महिमा रही विशेष॥2॥
सप्त षतक मुनि संघ में लेकर, श्री अकम्पनाचार्य मुनीष।
पद विहार करके आए थे, जिनके चरण झुकाएँ शीष॥
पूर्व कर्म का फल यह मानें, जिन पर हुआ घोर उपसर्ग।
सहन किए सब समता धरी, पाने चले सन्त अपवर्ग॥3॥
पद्म राय राजा के आगे, बलि आदिक मंत्री थे चार।
माँगे जो वरदान कपट से, किया पूर्व में था उपकार॥
पद्म राय ने निष्चल होके, दिया मंत्रियों को वरदान।
राज्य चलाओ सात दिनों तक, किया राज्य में यह ऐलान॥4॥
चारों ओर से अग्नि जलाकर, किये वहाँ पर कुत्सित यज्ञ।
सहन किए उपसर्ग सर्व मुनि, ध्यान लगाए जो आत्मज्ञ॥
क्षुल्लक जी ने हाल सुनाया, विष्णु कुमार मुनी के पास।
ब्राह्मण भेष धरकर मुनिवर, किए पूर्ण उपसर्ग विनाष॥5॥
श्री अकम्पनाचार्य आदि फिर, करने को निकले आहार।
रक्षा बन्धन पर्व तभी से, लोग मनाए शुभ त्योहार॥
वात्सल्य का पर्व मनाते, प्राणी होके भाव विभोर।
भव्य जीव सब हर्ष मनाए, खुशियाँ छाई चारों ओर॥6॥

(इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

स्थापना

सोरठा श्रेय प्रदाता आप, श्री श्रेयान्स जिन गाए हैं।
करते हैं हम जाप, आह्वानन् कर निज हृदय॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पद्धरि छन्द)

हम चढ़ा रहे यह शुद्ध नीर, जन्मादि रोग की मिटे पीर।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केसर को लिया साथ, भव ताप नाश हो मेरा नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यह लाए धवल आज, अक्षय पद का अब मिले ताज।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्पों के अर्पित करें थाल, हम झुका रहे तव चरण भाल।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लिए हाथ, अब क्षुधा से मुक्ती मिले नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम जला रहे हैं यहाँ दीप, अब पहुँचे शिव पद के समीप।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अब नाश होय प्रभु मोह पास, शिवपुर में मेरा होय वास।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥7॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ा रहे हम यहाँ आन, अब मिले शीघ्र ही मोक्ष धाम।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते हम अनूप, प्रगटाएँ अपना निज स्वरूप
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

पाए गर्भ भगवान्, ज्येष्ठ कृष्ण छठवी दिना।
किए देव गुणगान, उत्सव कीन्हे गर्भ का॥1॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
इन्द्र स्वर्ग से आन, न्हवन कराए मेरु पे॥2॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा धारे नाथ, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
चरण झुकाएँ माथ, सुर नर मुनि के इन्द्र सब॥3॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए केवल ज्ञान, माघ कृष्ण की अमावस।
किए जगत कल्याण, दिव्य देशना आप दे॥4॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये भगवान, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।
पाए मोक्ष कल्याण, तीर्थराज सम्मेद से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा श्रेय प्रदायक श्रेयजिन, हुए जो मंगलकार।
जयमाला गाते चरण, भविजन बारम्बार।।

(चाल छन्द)

श्रेयांस नाथ गुणधारी, इसजग में मंगलकारी।
है सिंहपुरी शुभकारी, जन्मे श्रेयांस त्रिपुरारी।।1।।
नृप विष्णूराज कहाए, माँ वेणू देवी पाए।
यह अन्तिम गर्भ कहाए, प्रभु जन्म कल्याणक पाए।।2।।
किए रत्नवृष्टी शुभकारी, सुर किए प्रशंसा भारी।
गेण्डा लक्षण शुभ पाए, तन अस्सी धनुष का पाए।।3।।
चौरासी वर्ष की स्वामी, आयू पाए शिवगामी।
लक्ष्मी बसन्त विनशाई, लख मुनिवर दीक्षा पाई।।4।।
तब देव पालकी लाए, प्रभु को वन में पहुँचाए।
प्रभु आतम ध्यान लगाए, फिर केवल ज्ञान जगाए।।5।।
सुर समवशरण बनवाए, सात योजन का जो गाए।
प्रभु दिव्य ध्वनी सुनाए, सुर नर पशु मंगल गाए।।6।।

दोहा कर्म नाशकर के प्रभू, पाए पद निर्वाण।
भव्य जीव जिनका 'विशद', करें श्रेष्ठ गुणगान।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री विष्णुकुमार मुनि पूजन

स्थापना

दोहा- वात्सल्य धरी हुए, मुनिवर विष्णुकुमार।
निज उर में आह्वान कर, पूजें बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुने! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुने! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज-माता तू दया करके.....)

जिसको अपना माना, उसने संताप दिया।
यह समझ नहीं आया, फिर भी क्यों राग किया।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

भव-भव में हे स्वामी!, हमने संताप सहा।
अब सहा नही जाए, प्रभु मैटो द्वेष महा।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्व. स्वाहा।

तन धन परिजन जो हैं, सब नष्वर है माया।
जिस तन में रहते हैं, वह क्षण भंगुर काया।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह काम लुटेरा है, शास्वत गुण लूट रहा।
हम मौन खड़े निर्बल, ना हमसे छूट रहा।।

ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

इस क्षुध रोग से हम, सदियों से सताए हैं।
व्यंजन की औषधि खा, ना तृप्ती पाए हैं।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय क्षुधरोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम पर में खोए हैं, पर की महिमा गाई।
इस मोहवली ने प्रभु, निज की सुधि विसराई।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों की आँधी से, चेतन गृह विखर गया।
तव दर्शन करके प्रभु, मम चेतन निखर गया।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पाप बीज बोए, षिव फल कैसे पाएँ।
तव अर्चा करके हम, प्रभु सिद्धालय जाएँ।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्मों ने मिलकर, जग में भरमाया है।
अब षिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाया है।।

ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूर्व पुण्य से हे प्रभो!, पाए आपके दर्श।
शांती धरा दे रहें, जागे मम उर हर्ष।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- पूजा करते आपकी, होके भाव विभोर।
यही भावना है विशद, बढ़ें मोक्ष की ओर।।

।। दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जाप-ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार महामुनये नमः।

जयमाला

दोहा- विष्णु कुमार मुनिवर किए, करुणा कर उपकार।
जयमाला गाते विशद, जिनकी मंगलकार।।

चौपाई

मुनिवर विष्णु कुमार कहाए, पावन जो संयम अपनाए।
धरणी भूशण पर्वत जानो, किए ध्यान जाके शुभ मानो।।
पुश्पदन्त क्षुल्लक जी आए, गुरुवर का सन्देश सुनाए।
ऋद्धि विक्रिया तुमने पाई, जिसकी अब आवष्यकता आई।।
नगर हस्तिनापुर में जानो, श्री अकम्पनाचार्य जी मानो।
सात सौ मुनियों के संग आए, जहाँ बैठकर ध्यान लगाए।।
राजा पद्म राय कहलाए, मंत्री जिसके चार बताए।
बलि प्रह्लाद बृहस्पति जानो, और नमुचि जिनके हैं मानो।।
उज्जैनी के रहने वाले, मुनि के कारण देश निकाले।
मुनि को देख के जो घबड़ाए, राजा से बरदान मँगाए।।
सात दिनों तक राज चलाए, चारों मंत्री यज्ञ रचाए।
मुनियों पर उपसर्ग कराए, मुनिवर समता भाव जगाए।।
विष्णु कुमार मुनी तब आए, बटुक विप्र का भेश बनाए।

बलि आदिक जो राज्य चलाए, उनसे भिक्षा पाने आए।।
तीन पैढ़ भूमि जो पाए, देने का संकल्प कराए।
फिर मुनिवर ऋद्धी प्रगटाए, मेरू गिरि तक पग फैलाए।।
दूजा मानुशोत्तर गिरि धरे, मंत्री तव घबड़ाए सारे।
बलि मंत्री चरणों झुक जाता, पीठ पे अपना पग रखवाता।।
भार सहन बलि ना कर पाया, क्षमादान का षब्द गुँजाया।
झुके चरण में मंत्री सारे, मुनियों का उपसर्ग निवारे।।
घर-घर में तब उत्सव छाया, मुनियों को आहार कराया।
श्रावक सारे खुशी मनाये, कर में रक्षा सूत्र बँधए।।
श्रावक षुक्ल पूर्णिमा पाए, रक्षाबन्धन पर्व कहाए।
वात्सल्य का पर्व मनेगा, युगों-युगों तक अमर रहेगा।।

(घत्ता छन्द)

श्री मुनिवर ज्ञानी, आतम ध्यानी, दृढ़ श्रद्धानी सुखदानी।
जिनकी शुभ वाणी, शुभ वरदानी, जन जन की है कल्याणी।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- विष्णु कुमार मुनीष पद, जो पूजें धर ध्यान।
'विशद' सौख्य पाके सभी, पावें मोक्ष निधन।।

।। इत्याशीर्वादः।।

अकम्पनाचार्यादि सप्तशत ऋषि पूजा

स्थापना

सप्तषतक उपसर्ग जयी ऋषि, जैन जगत में हुए महान।
मोक्षमार्ग के राही अनुपम, करने वाले जग कल्याण।।
विशद साधना करने वाले, स्थिर होकर करते ध्यान।
श्री अकम्पनाचार्य आदि का, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषत मुनेः! समूह अत्र अवतर-अवतर संवौशट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषत मुनेः! समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषत मुनेः! समूह अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज-सोलहकारण पूजन.....)

श्रद्धा से जल चरण चढ़ाय, त्रय धरा देकर हर्षाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक सुख प्राणी पाय, गुरु पूजा षिव सुख दिलवाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत श्री जिन चरण चढ़ाय, वह अक्षय पदवी को पाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषय वासना है दुखदाय, काम नषाने पुष्प चढ़ाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो काम बाण विधवंषनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सारे भोजन खाय, फिर भी तृप्त नहीं हो पाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।

मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो क्षुध रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी शुभ दीप जलाय, मिथ्या तम को पूर्ण नषाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

षुष्प धूप जिन चरण चढ़ाय, अष्ट कर्म को पूर्ण नषाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो अश्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे फल मुक्ति प्रदाय, कर्म फलों की शक्ति नषाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की नौका पाय, पद अनर्घ्य प्राणी प्रगटाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- दर्पण सम प्रभु ज्ञान में, झलके लोकालोक।
शांती धरा दे रहे, मिटे रोग या शोक॥
॥शान्तये शांतिधारा॥

दोहा- गुणानन्त पर्याय को, जाने श्री भगवान।
पुष्पांजलि करते, चरण पाने षिव सोपान॥
॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

जयमाला

दोहा- श्री अकम्पनाचार्य जी, आदिक ऋषी महान।
सहन किए उपसर्ग जो, करते हम गुणगान॥

शम्भू छन्द

मोक्षमार्ग के राही बनने, पाया जिनने सद् श्रद्धान।
यथातथ्य वस्तु स्वरूप को जाना पाके सम्यकज्ञान॥
पंचपाप से विरहित चर्या, कहलाए सम्यक चारित्र।
इस प्रकार रत्नत्रय पावन, धरा आपने परम पवित्र॥1॥
पंच महाव्रत समिति इन्द्रिय, पंच के होके जयकारी।
षट आवष्यक पालन करने वाले पावन अनगारी॥
केषलुंच एकाषन स्थित, भोजन करते क्षिति षयन।
मंजन नन्हध्वन चेल से विरहित, ईर्यापथ से करें गमन॥2॥
विषयाषा को तजने वाले, हैं आरम्भ परिग्रह हीन।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, रहते हैं निज आतमलीन॥
ऐसे परम तपस्वी साधू, करते हैं निज पर कल्याण।
विशद भाव से करते हैं हम, पावन ऋषियों का गुणगान॥3॥

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, मुक्ति वधू के कंत।
ऋषिवर अनगारी विशद, अपनाए षिव पंथ॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भाते हैं हम भावना, कभी ना हो उपसर्ग।
भव्य जीव इस लोक में, पावे सब अपवर्ग॥
॥इत्याशीर्वाद:पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

(प्रथम वलयः)

सोरठा- ऋषि अकम्पनाचार्य, आदिक मुनिवर सात सौ।
पूजें जिन पद आर्य, जीते हैं उपसर्ग ऋषि॥

।।मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपामि।।

चौपाई छन्द

ऋषि अकम्पनाचार्य कहाए, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥1॥

ॐ ह्रूँ श्री अकम्पनाचार्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्रुतसागर जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥2॥

ॐ ह्रः श्री श्रुतसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर पिहितास्रव जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥3॥

ॐ ह्रः श्री पिहितास्रव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रीतिवर्धन जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥4॥

ॐ ह्रः श्री प्रीतिवर्धनमुनि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अमितंजय कहाए, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥5॥

ॐ ह्रः श्री अमितंजय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अमिततेज जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥6॥

ॐ ह्रः श्री अमिततेज महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अर्ककीर्तये जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥7॥

ॐ ह्रः श्री अर्ककीर्तये महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अनन्तवीर्य जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥8॥

ॐ ह्रः श्री अनन्तवीर्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर कीर्तिधर जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥9॥

ॐ ह्रः श्री कीर्तिधर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर बज्रबाहु जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥10॥

ॐ ह्रः श्री बज्रबाहु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर उदयसुंदर जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥11॥

ॐ ह्रः श्री उदयसुंदर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर स्वस्तिकनन्दि जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥12॥

ॐ ह्रः श्री स्वस्तिकनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर शुभमति जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥13॥

ॐ ह्रः श्री शुभमति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर चक्षुष्मान् जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥14॥

ॐ ह्रः श्री चक्षुष्मान् महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर पृथ्वीभूषण जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥15॥

ॐ ह्रः श्री पृथ्वीभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर हिमषीतल जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥16॥

ॐ ह्रः श्री हिमषीतल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्रीवर्मा जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥17॥

ॐ ह्रः श्री श्रीवर्मा महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर ललितप्रभ जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।18।।

ॐ ह्रः श्री ललितप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सौम्यप्रभ जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।19।।

ॐ ह्रः श्री सौम्यप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विद्युत्प्रभ जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।20।।

ॐ ह्रः श्री विद्युत्प्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुप्रभ जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।21।।

ॐ ह्रः श्री सुप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुविधि जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।22।।

ॐ ह्रः श्री सुविधि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रियदत्त जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।23।।

ॐ ह्रः श्री प्रियदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्रीषेण जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।24।।

ॐ ह्रः श्री श्रीषेण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्रीभद्र जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।25।।

ॐ ह्रः श्री श्रीभद्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वृषभसेन जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।26।।

ॐ ह्रः श्री वृषभसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुवज्र जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।27।।

ॐ ह्रः श्री सुवज्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वज्रवान् जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।28।।

ॐ ह्रः श्री वज्रवान् महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विद्युत्वान् जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।29।।

ॐ ह्रः श्री विद्युत्वान् महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विद्युद्वेग जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।30।।

ॐ ह्रः श्री विद्युद्वेग महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विद्युद्दृढ़ जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।31।।

ॐ ह्रः श्री विद्युद्दृढ़ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्रीवर्द्धन जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।32।।

ॐ ह्रः श्री श्रीवर्द्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रतिश्रुति जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।33।।

ॐ ह्रः श्री प्रतिश्रुति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मणिस्यन्दन कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।34।।

ॐ ह्रः श्री मणिस्यन्दन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर व्योमेन्दु जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।35।।

ॐ ह्रः श्री व्योमेन्दु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर पूर्णचन्द्र जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।36।।

ॐ ह्रः श्री पूर्णचन्द्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विमलवान जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।37।।

ॐ ह्रः श्री विमलवान महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर व्रजायुध जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।38।।

ॐ ह्रः श्री व्रजायुध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर हर्षवर्धन जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।39।।

ॐ ह्रः श्री हर्षवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि यषोवर्धन कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।40।।

ॐ ह्रः श्री यषोवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अनुत्तर गाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।41।।

ॐ ह्रः श्री अनुत्तर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि आदित्यगति कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।42।।

ॐ ह्रः श्री आदित्यगति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि चंद्रगति कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।43।।

ॐ ह्रः श्री चंद्रगति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि चिंतागति कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।44।।

ॐ ह्रः श्री चिंतागति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि श्रुतकीर्ति कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।45।।

ॐ ह्रः श्री श्रुतकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि चारुकीर्ति कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।46।।

ॐ ह्रः श्री चारुकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि निर्वाणसंगम कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।47।।

ॐ ह्रः श्री निर्वाणसंगम महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर नमि आप कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।48।।

ॐ ह्रः श्री नमि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज विनमि कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।49।।

ॐ ह्रः श्री विनमि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज रत्नमाली कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।50।।

ॐ ह्रः श्री रत्नमाली महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज रत्नवज्र कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।51।।

ॐ ह्रः श्री रत्नवज्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वज्राभ कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।52।।

ॐ ह्रः श्री वज्राभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज चंद्ररथ गाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।53।।

ॐ ह्रः श्री चंद्ररथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज चित्ररथ गाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।54।।

ॐ ह्रः श्री चित्ररथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज हर्षकीर्ति कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।55।।

ॐ ह्रः श्री हर्षकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अमरकीर्ति कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।56।।

ॐ ह्रः श्री अमरकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि आनंदकीर्ति कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।57।।

ॐ ह्रः श्री आनंदकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अभिचंद्र कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।58।।

ॐ ह्रः श्री अभिचंद्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर चन्द्राभ कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।59।।

ॐ ह्रः श्री चन्द्राभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि महापद्म कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।60।।

ॐ ह्रः श्री महापद्म महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि चक्रायुध कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।61।।

ॐ ह्रः श्री चक्रायुध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि प्रीतिंकर कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।62।।

ॐ ह्रः श्री प्रीतिंकर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि त्रिदशंजय कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।63।।

ॐ ह्रः श्री त्रिदशंजय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अभिनंदन कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।64।।

ॐ ह्रः श्री अभिनंदन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अलंकारोदय गाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।65।।

ॐ ह्रः श्री अलंकारोदय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि जयकीर्तन कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।66।।

ॐ ह्रः श्री जयकीर्तन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सुलोचन गाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।67।।

ॐ ह्रः श्री सुलोचन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सुदर्शन गाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।68।।

ॐ ह्रः श्री सुदर्शन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि नलिनप्रभ गाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।69।।

ॐ ह्रः श्री नलिनर्प्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि विपुलसागर कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।70।

ॐ ह्रः श्री विपुलसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि निपुणसागर कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।71।।

ॐ ह्रः श्री निपुणसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि जितभास्कर कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।72।।

ॐ ह्रः श्री जितभास्कर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अमृतवेग कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।73।।

ॐ ह्रः श्री अमृतवेग महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सम्प्रति आप कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।74।।

ॐ ह्रः श्री सम्प्रति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सर्वप्रिय कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।75।।

ॐ ह्रः श्री सर्वप्रिय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सर्वदयित कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।76।।

ॐ ह्रः श्री सर्वदयित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अरिन्दमन कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।77।।

ॐ ह्रः श्री अरिन्दमन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि धवलकीर्ति कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥78॥

ॐ ह्रः श्री धवलकीर्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि विषालकीर्ति कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥79॥

ॐ ह्रः श्री विषालकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि प्रश्नकीर्ति कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥80॥

ॐ ह्रः श्री प्रश्नकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज सुव्यक्त कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥81॥

ॐ ह्रः श्री सुव्यक्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि धर्मघोष कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥82॥

ॐ ह्रः श्री धर्मघोष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि रविप्रभ आप कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥83॥

ॐ ह्रः श्री रविप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज अमरप्रभ कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥84॥

ॐ ह्रः श्री अमरप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज सूर्यप्रभ कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥85॥

ॐ ह्रः श्री सूर्यप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सौनन्दन कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥86॥

ॐ ह्रः श्री सौनन्दन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सुप्रतिष्ठ कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥87॥

ॐ ह्रः श्री सुप्रतिष्ठ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि कान्तिधर कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥88॥

ॐ ह्रः श्री कान्तिधर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि चन्द्रवाहन कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥89॥

ॐ ह्रः श्री चन्द्रवाहन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर शतबाहु कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥90॥

ॐ ह्रः श्री षतबाहु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज सुबाहु कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥91॥

ॐ ह्रः श्री सुबाहु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि यषोबाहु कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥92॥

ॐ ह्रः श्री यषोबाहु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सहस्रबाहु कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥93॥

ॐ ह्रः श्री सहस्रबाहु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सहस्ररष्मि कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥94॥

ॐ ह्रः श्री सहस्ररष्मि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि समाधिगुप्त कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥95॥

ॐ ह्रः श्री समाधिगुप्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अभयघोष कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥96॥

ॐ ह्रः श्री अभयघोष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अनन्तबल गाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥97॥

ॐ ह्रः श्री अनन्तबल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अनरण्यरथ कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥98॥

ॐ ह्रः श्री अनरण्यरथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अनन्तरथ गाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥99॥

ॐ ह्रः श्री अनन्तरथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अतिभूति कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥100॥

ॐ ह्रः श्री अतिभूति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

श्री अकम्पनाचार्य आदि सौ, ऋषियों का करके गुणगान।
पूर्ण अर्घ्य चरणों में जिनके, अर्पित करते यहाँ महान॥

ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यादि सप्तऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पूजा कर ऋषिराज की, देते शांतिधार।
पुष्पांजलि करते चरण, नत हो बारंबार॥

॥शान्तये शांतिधारा॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

(द्वितिय वलयः)

द्वितीय वलय के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पुष्पांजलि करते विशद, पानें सुपद अनर्घ्य॥

॥द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(छन्द चौपाई)

ऋषिवर अमृतसिंधु कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥101॥

ॐ ह्रः श्री अमृतसिंधु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर आनंदमाल कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥102॥

ॐ ह्रः श्री आनंदमाल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अभिनवकीर्ति कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥103॥

ॐ ह्रः श्री अभिनवकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अभयरुचि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥104॥

ॐ ह्रः श्री अभयरुचि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अतिमुक्तक कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥105॥

ॐ ह्रः श्री अतिमुक्तक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर कुसुमांजलि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥106॥

ॐ ह्रः श्री कुसुमांजलि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अजातषत्रु कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥107॥

ॐ ह्रः श्री अजातषत्रु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी अमरप्रभ आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥108॥

ॐ ह्रः श्री अमरप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री अवरुद्ध कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥109॥

ॐ ह्रः श्री अवरुद्ध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अतिबल आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥110॥

ॐ ह्रः श्री अतिबल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री अतिभूति कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥111॥

ॐ ह्रः श्री अतिभूति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री उपशांत कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥112॥

ॐ ह्रः श्री उपशांत महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रशान्तदमन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥113॥

ॐ ह्रः श्री प्रशान्तदमन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी प्रषमरति आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥114॥

ॐ ह्रः श्री प्रषमरति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी कनकप्रभ आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥115॥

ॐ ह्रः श्री कनकप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर संभिन्नमति कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥116॥

ॐ ह्रः श्री संभिन्नमति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सर्वभूतहित गाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥117॥

ॐ ह्रः श्री सर्वभूतहित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर यषोमित्र कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥118॥

ॐ ह्रः श्री यषोमित्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रीतिकान्त कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥119॥

ॐ ह्रः श्री प्रीतिकान्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर चन्द्ररष्मि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥120॥

ॐ ह्रः श्री चन्द्ररष्मि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सौन्दर्यभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥121॥

ॐ ह्रः श्री सौन्दर्यभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री विष्वभूति कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥122॥

ॐ ह्रः श्री विष्वभूति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री विष्वप्रीति कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥123॥

ॐ ह्रः श्री विष्वप्रीति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विनयलालस कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥124॥

ॐ ह्रः श्री विनयलालस महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विनयवान कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥125॥

ॐ ह्रः श्री विनयवान महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री जयवान कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥126॥

ॐ ह्रः श्री जयवान महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जगन्नदन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥127॥

ॐ ह्रः श्री जगन्नदन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी तिलकनंदन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥128॥

ॐ ह्रः श्री तिलकनंदन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री श्रीकण्ठ कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥129॥

ॐ ह्रः श्री श्रीकण्ठ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वज्रकण्ठ कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥130॥

ॐ ह्रः श्री वज्रकण्ठ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर नीलकण्ठ कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥131॥

ॐ ह्रः श्री नीलकण्ठ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अपराजित कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥132॥

ॐ ह्रः श्री अपराजित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अनंगपुष्प कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥133॥

ॐ ह्रः श्री अनंगपुष्प महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अनंगवीचि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥134॥

ॐ ह्रः श्री अनंगवीचि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रसन्नकीर्ति कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥135॥

ॐ ह्रः श्री प्रसन्नकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सामन्तवर्धन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥136॥

ॐ ह्रः श्री सामन्तवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सहस्रभाग कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥137॥

ॐ ह्रः श्री सहस्रभाग महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप लोकबिन्दुसार कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥138॥

ॐ ह्रः श्री लोकबिन्दुसार महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर यज्ञदत्त कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥139॥

ॐ ह्रः श्री यज्ञदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर तपभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥140॥

ॐ ह्रः श्री तपभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर कनकद्युति कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥141॥

ॐ ह्रः श्री कनकद्युति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी बृहद्गति आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥142॥

ॐ ह्रः श्री बृहद्गति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी श्री धन्य कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥143॥

ॐ ह्रः श्री धन्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री दमयन्त कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥144॥

ॐ ह्रः श्री दमयन्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर नन्दिशेण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥145॥

ॐ ह्रः श्री नन्दिशेण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी नन्दिवर्धन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥146॥

ॐ ह्रः श्री नन्दिवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी धर्मवर्धन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥147॥

ॐ ह्रः श्री धर्मवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर कुलवर्धन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥148॥

ॐ ह्रः श्री कुलवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर मतिवर्धन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥149॥

ॐ ह्रः श्री मतिवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्रुतवर्धन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥150॥

ॐ ह्रः श्री श्रुतवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी चन्द्रवर्धन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥151॥

ॐ ह्रः श्री चन्द्रवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी श्री उदित कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥152॥

ॐ ह्रः श्री उदित श्रुतवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी श्री मुदित कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥153॥

ॐ ह्रः श्री मुदित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रमुदित आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥154॥

ॐ ह्रः श्री प्रमुदित श्रुतवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रियव्रत आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥155॥

ॐ ह्रः श्री प्रियव्रत महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी सत्यव्रत जी कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥156॥

ॐ ह्रः श्री सत्यव्रत महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी सुभूषण आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥157॥

ॐ ह्रः श्री सुभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर कुलभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥158॥

ॐ ह्रः श्री कुलभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी धर्मभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥159॥

ॐ ह्रः श्री धर्मभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी सर्वभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥160॥

ॐ ह्रः श्री सर्वभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी संयमभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥161॥

ॐ ह्रः श्री संयमभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी षीलभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥162॥

ॐ ह्रः श्री षीलभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर तपभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥163॥

ॐ ह्रः श्री तपभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सत्यभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥164॥

ॐ ह्रः श्री सत्यभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी क्षमाभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥165॥

ॐ ह्रः श्री क्षमाभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रणवभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥166॥

ॐ ह्रः श्री प्रणवभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर धर्मबुद्धि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥167॥

ॐ ह्रः श्री धर्मबुद्धि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुयोग्यसागर कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥168॥

ॐ ह्रः श्री सुयोग्यसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर आप सुभद्र कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥169॥

ॐ ह्रः श्री सुभद्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर स्वर्णभद्र कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥170॥

ॐ ह्रः श्री स्वर्णभद्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर पूर्णभद्र कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥171॥

ॐ ह्रः श्री पूर्णभद्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री सिद्धार्थ कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥172॥

ॐ ह्रः श्री सिद्धार्थ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर आप सुबन्धु कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥173॥

ॐ ह्रः श्री सुबन्धु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर आप प्रहस्त कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥174॥

ॐ ह्रः श्री प्रहस्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी प्रसेनजित आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥175॥

ॐ ह्रः श्री प्रसेनजित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रभासकुन्द कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥176॥

ॐ ह्रः श्री प्रभासकुन्द महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अभ्युदय कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥177॥

ॐ ह्रः श्री अभ्युदय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी पद्मरुचि आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥178॥

ॐ ह्रः श्री पद्मरुचि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर चन्द्रसेन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥179॥

ॐ ह्रः श्री चन्द्रसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी वृषभधवज आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥180॥

ॐ ह्रः श्री वृषभधवज महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि कुण्डलमण्डित कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥181॥

ॐ ह्रः श्री कुण्डलमण्डित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विषालकीर्ति कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥182॥

ॐ ह्रः श्री विषालकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर समुद्रघोष कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥183॥

ॐ ह्रः श्री समुद्रघोष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर साधुदत्त कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥184॥

ॐ ह्रः श्री साधुदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर क्षेमंकर कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥185॥

ॐ ह्रः श्री क्षेमंकर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर उज्ज्वलरत्न कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥186॥

ॐ ह्रः श्री उज्ज्वलरत्न महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर मेघवाहन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥187॥

ॐ ह्रः श्री मेघवाहन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुरप्रभ आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥188॥

ॐ ह्रः श्री सुरप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री यषपाल कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥189॥

ॐ ह्रः श्री यषपाल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर यषोधर्म कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥190॥

ॐ ह्रः श्री यषोधर्म महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री वल्लभ कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥191॥

ॐ ह्रः श्री वल्लभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वीतशोक कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥192॥

ॐ ह्: श्री वीतशोक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अभयनन्दि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥193॥

ॐ ह्: श्री अभयनन्दि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विष्वनन्दि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥194॥

ॐ ह्: श्री विष्वनन्दि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी विचित्ररथ आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥195॥

ॐ ह्: श्री विचित्ररथ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री प्रियबन्धु कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥196॥

ॐ ह्: श्री प्रियबन्धु महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर षालिवाहन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥197॥

ॐ ह्: श्री षालिवाहन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर गुणधर आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥198॥

ॐ ह्: श्री गुणधर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि स्कन्धगुप्त कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥199॥

ॐ ह्: श्री स्कन्धगुप्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर देशभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥200॥

ॐ ह्: श्री देशभूषण महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

अमृतसिंधु आदि ऋषिवर, सौ का हम करते है गुणगान।
अर्चा करके जिनके चरणों, अर्घ्य चढ़ाते महति महान॥

ॐ ह्रीं द्वितियशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांतिधारा दे रहे, पुष्पांजलि के साथ।
चरणों में वंदन करे, ऊपर करके हाथ॥

।।शान्त्यै शांतिधारा।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

तृतिय वलय:

दोहा- तृतिय वलय की हम यहाँ, पूजा करते आज।
हुए पूर्व में जो ऋषी, उन पर हमको नाज॥

।।तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(वीर छन्द)

ऋषि प्रद्योत के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार॥201॥

ॐ ह्: श्री प्रद्योत महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर पुष्पमित्र के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार॥202॥

ॐ ह्: श्री पुष्पमित्र महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर नरवाहन के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार॥203॥

ॐ ह्: श्री नरवाहन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर नागसेन के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार॥204॥

ॐ ह्: श्री नागसेन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर रामसेन के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार॥205॥

ॐ ह्: श्री रामसेन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री धृतिषेण के चरणों, वन्दन करते बारम्बार
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार॥206॥

ॐ ह्: श्री धृतिषेण महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री रतिषेण के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।207।।

ॐ ह्रः श्री रतिषेण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री रविषेण के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।208।।

ॐ ह्रः श्री रविषेण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री सोमसेन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।209।।

ॐ ह्रः श्री सोमसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री जिनसेन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।210।।

ॐ ह्रः श्री जिनसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वीरसेन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।211।।

ॐ ह्रः श्री वीरसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर देवसेन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।212।।

ॐ ह्रः श्री देवसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वारिषेण के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।213।।

ॐ ह्रः श्री वारिषेण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर कुमारसेन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।214।।

ॐ ह्रः श्री कुमारसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर यषोभद्र के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।215।।

ॐ ह्रः श्री यषोभद्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि जिनेन्द्रबुद्वि के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।216।।

ॐ ह्रः श्री जिनेन्द्रबुद्धि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री गुणरत्न के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।217।।

ॐ ह्रः श्री गुणरत्न महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वज्रनंदि के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।218।।

ॐ ह्रः श्री वज्रनंदि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर लोकनंद के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।219।।

ॐ ह्रः श्री लोकनंद महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुरेन्द्रकीर्ति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।220।।

ॐ ह्रः श्री सुरेन्द्रकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री जगत्कीर्ति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।221।।

ॐ ह्रः श्री जगत्कीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर नयनकीर्ति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।222।।

ॐ ह्रः श्री नयनकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री शुभकीर्ति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।223।।

ॐ ह्रः श्री शुभकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर त्रिभुवनकीर्ति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।224।।

ॐ ह्रः श्री त्रिभुवनकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुमति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।225।।

ॐ ह्रः श्री सुमति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ऋषिराज हर्ष के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।। 226।।

ॐ ह्रः श्री ऋषिराज महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री अनन्त के चरणों, वंदन करते हैं हम बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।227।।

ॐ ह्रः श्री अनन्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री गुणनन्दि के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।228।।

ॐ ह्रः श्री गुणनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री दुर्लभ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।229।।

ॐ ह्रः श्री दुर्लभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री षिवगुप्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।230।।

ॐ ह्रः श्री षिवगुप्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विनयन्धर के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।231।।

ॐ ह्रः श्री विनयन्धर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर माघनन्दि के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।232।।

ॐ ह्रः श्री माघनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री गुरुदत्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।233।।

ॐ ह्रः श्री गुरुदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विषाखनन्दि के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।234।।

ॐ ह्रः श्री विषाखनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विषाखभूति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।235।।

ॐ ह्रः श्री विषाखभूति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विद्युत्प्रभाय के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।236।।

ॐ ह्रः श्री विद्युत्प्रभाय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री वषिष्ठ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।237।।

ॐ ह्रः श्री वषिष्ठ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री वरुण के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।238।।

ॐ ह्रः श्री वरुण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री वैश्रवण के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।239।।

ॐ ह्रः श्री वैश्रवण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री षिवदत्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।240।।

ॐ ह्रः श्री षिवदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर समुद्रदत्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।241।।

ॐ ह्रः श्री समुद्रदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर समुद्रविजय के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।242।।

ॐ ह्रः श्री समुद्रविजय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सागरदत्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।243।।

ॐ ह्रः श्री सागरदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रतिज्ञासागर चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।244।।

ॐ ह्रः श्री प्रतिज्ञासागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री प्रबोध के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।245।।

ॐ ह्रः श्री प्रबोध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर महोदधि के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।246।।

ॐ ह्रः श्री महोदधि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विद्युत्केष के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।247।।

ॐ ह्रः श्री विद्युत्केष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वज्रदन्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।248।।

ॐ ह्रः श्री वज्रदन्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुयषोदत्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।249।।

ॐ ह्रः श्री सुयषोदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुप्रभात के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।250।।

ॐ ह्रः श्री सुप्रभात महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर धर्मनन्दन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।251।।

ॐ ह्रः श्री धर्मनन्दन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विचित्रेत्सव के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।252।।

ॐ ह्रः श्री विचित्रेत्सव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री विमुचि के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।253।।

ॐ ह्रः श्री विमुचि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री प्रतिष्ठित चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।254।।

ॐ ह्रः श्री प्रतिष्ठित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री भवभूति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।255।।

ॐ ह्रः श्री भवभूति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री मुनिचन्द्र के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।256।।

ॐ ह्रः श्री मुनिचन्द्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री चक्रांक के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।257।।

ॐ ह्रः श्री चक्रांक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री जयघोष के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।258।।

ॐ ह्रः श्री जयघोष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर चन्द्रवाहन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।259।।

ॐ ह्रः श्री चन्द्रवाहन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री धर्मसेन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।260।।

ॐ ह्रः श्री धर्मसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री विष्वसेन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।261।।

ॐ ह्रः श्री विष्वसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री नन्दिघोष के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।262।।

ॐ ह्रः श्री नन्दिघोष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री अग्निभूति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।263।।

ॐ ह्रः श्री अग्निभूति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वायुभूति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।264।।

ॐ ह्रः श्री वायुभूति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर कीर्तिमान के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।265।।

ॐ ह्रः श्री कीर्तिमान महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री सुमेरु के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।266।।

ॐ ह्रः श्री सुमेरु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री महाबल के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।267।।

ॐ ह्रः श्री महाबल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री पद्म के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।268।।

ॐ ह्रः श्री पद्म महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रीतिकान्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।269।।

ॐ ह्रः श्री प्रीतिकान्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर पंकजगुल्म के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।270।।

ॐ ह्रः श्री पंकजगुल्म महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री दृढ़रथ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।271।।

ॐ ह्रः श्री दृढ़रथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर महामेघरथ चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।272।।

ॐ ह्रः श्री महामेघरथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री श्रीधर्म के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।273।।

ॐ ह्रः श्री श्रीधर्म महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुरश्रेष्ठ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।274।।

ॐ ह्रः श्री सुरश्रेष्ठ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर यषस्कान्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।275।।

ॐ ह्रः श्री यषस्कान्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वज्रसेन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।276।।

ॐ ह्रः श्री वज्रसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर महातेज के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।277।।

ॐ ह्रः श्री महातेज महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर रिपुन्दमन के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।278।।

ॐ ह्रः श्री रिपुन्दमन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री स्वयंप्रभ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।279।।

ॐ ह्रः श्री स्वयंप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री प्रौष्ठिल के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।280।।

ॐ ह्रः श्री प्रौष्ठिल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री षिवभूति के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।281।।

ॐ ह्रः श्री षिवभूति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री धर्मरूचि के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।282।।

ॐ ह्रः श्री धर्मरूचि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री परीक्षित के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।283।।

ॐ ह्रः श्री परीक्षित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि जिनदत्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।284।।

ॐ ह्रः श्री जिनदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर विचित्रगुप्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।285।।

ॐ ह्रः श्री विचित्रगुप्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर चित्रगुप्त के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।286।।

ॐ ह्रः श्री चित्रगुप्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर त्रिलोकभूषण के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।287।।

ॐ ह्रः श्री त्रिलोकभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री सुप्रभ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।288।।

ॐ ह्रः श्री सुप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री सुनन्दन चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।289।।

ॐ ह्रः श्री सुनन्दन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर स्वतंत्रलिंग के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।290।।

ॐ ह्रः श्री स्वतंत्रलिंग महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री अमितांक के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।291।।

ॐ ह्रः श्री अमितांक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुधर्ममित्र के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।292।।

ॐ ह्रः श्री सुधर्ममित्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री कपिल के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।293।।

ॐ ह्रः श्री कविल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री अचल के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।294।।

ॐ ह्रः श्री अचल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री नंदिमित्र के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।295।।

ॐ ह्रः श्री नंदिमित्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर रूपकुम्भ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।296।।

ॐ ह्रः श्री रूपकुम्भ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर स्वर्णकुम्भ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।297।।

ॐ ह्रः श्री स्वर्णकुम्भ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर षक्रटाल के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।298।।

ॐ ह्रः श्री षक्रटाल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर स्वयंबुद्ध के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।299।।

ॐ ह्रः श्री स्वयंबुद्ध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री सुव्रत के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धू से पार।।300।।

ॐ ह्रः श्री सुव्रत महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

संयम तप कर ऋद्धिया, पाते जैन ऋशीष।
पुष्पांजलि करते विशद, चरण झुकाते शीष।।

।।शान्तये शांतिधारा।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

चतुर्थ वलयः

।।चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(छन्द का नाम)

श्री दक्ष हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।301।।

ॐ ह्रः श्री दक्ष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुरेन्द्रमन्यु पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।302।।

ॐ ह्रः श्री सुरेन्द्रमन्यु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गुणसागर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।303।।

ॐ ह्रः श्री गुणसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिवीर्य हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।304।।

ॐ ह्र: श्री अतिवीर्य महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विजयषार्दूल पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।305।।

ॐ ह्र: श्री विजयषार्दूल महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री परमोत्साह पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।306।।

ॐ ह्र: श्री परमोत्साह महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री निर्वाणघोष पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।307।।

ॐ ह्र: श्री निर्वाणघोष महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितपद्म हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।308।।

ॐ ह्र: श्री जितपद्म महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमित्र हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।309।।

ॐ ह्र: श्री सुमित्र महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रियबन्धु हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।310।।

ॐ ह्र: श्री प्रियबन्धु महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री रत्नजटी पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।311।।

ॐ ह्र: श्री रत्नजटी महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चक्ररथ पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।312।।

ॐ ह्र: श्री चक्ररथ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री साहसगति पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।313।।

ॐ ह्र: श्री साहसगति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सहस्रकीर्ति पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।314।।

ॐ ह्र: श्री सहस्रकीर्ति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुयोधन हैं पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।315।।

ॐ ह्र: श्री सुयोधन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महाबाहु पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।316।।

ॐ ह्र: श्री महाबाहु महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री निष्चलप्रभ पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।317।।

ॐ ह्र: श्री निष्चलप्रभ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुमुदचंद्र पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।318।।

ॐ ह्र: श्री कुमुदचंद्र महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महाकांति पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।319।।

ॐ ह्र: श्री महाकांति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री रत्नाकर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।320।।

ॐ ह्र: श्री रत्नाकर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विभूति पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।321।।

ॐ ह्र: श्री विभूति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सनतकुमार पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।322।।

ॐ ह्र: श्री सनतकुमार महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुण्यवर्धन पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।323।।

ॐ ह्र: श्री पुण्यवर्धन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पूर्णधन पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥324॥
ॐ ह्रः श्री पूर्णधन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री मेघसुघन पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥325॥
ॐ ह्रः श्री मेघसुघन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री कनकप्रभ पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥326॥
ॐ ह्रः श्री कनकप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री संजयन्त पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥327॥
ॐ ह्रः श्री संजयन्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विजयन्त हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥328॥
ॐ ह्रः श्री विजयन्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विबुधधर हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥329॥
ॐ ह्रः श्री विबुधधर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री यमधर हैं पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥330॥
ॐ ह्रः श्री यमधर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री दमधर हैं पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥331॥
ॐ ह्रः श्री दमधर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री श्रीधर हैं पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥332॥
ॐ ह्रः श्री श्रीधर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री द्युतिमण्डल पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥333॥
ॐ ह्रः श्री द्युतिमण्डल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अशोकतिलक पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥334॥
ॐ ह्रः श्री अशोकतिलक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री अजितसागर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥335॥
ॐ ह्रः श्री अजितसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री विचित्रसागर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥336॥
ॐ ह्रः श्री विचित्रसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री जयसागर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥337॥
ॐ ह्रः श्री जयसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जयकीर्ति हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥338॥
ॐ ह्रः श्री जयकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री विजयकीर्ति पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥339॥
ॐ ह्रः श्री विजयकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री कनकोज्ज्वल पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥340॥
ॐ ह्रः श्री कनकोज्ज्वल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री कनकनन्दि पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥341॥
ॐ ह्रः श्री कनकनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री भव्यसेन पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥342॥
ॐ ह्रः श्री भव्यसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री पृथ्वीचन्द्र पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥343॥
ॐ ह्रः श्री पृथ्वीचन्द्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री समुद्रगुप्त पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥344॥
ॐ ह्रः श्री समुद्रगुप्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री रत्नश्रवा पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥345॥
ॐ ह्रः श्री रत्नश्रवा महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सागरसेन पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥346॥
ॐ ह्रः श्री सागरसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री रष्मिवेग पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥347॥
ॐ ह्रः श्री रष्मिवेग महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विपुल हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥348॥
ॐ ह्रः श्री विपुल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री षिवकुमार पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥349॥
ॐ ह्रः श्री षिवकुमार महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गुप्ति हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥350॥
ॐ ह्रः श्री गुप्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुगुप्ति हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥351॥
ॐ ह्रः श्री सुगुप्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री देवेन्द्रकीर्ति पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥352॥
ॐ ह्रः श्री देवेन्द्रकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विनयकीर्ति पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥353॥
ॐ ह्रः श्री विनयकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वज्रजंघ पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥354॥
ॐ ह्रः श्री वज्रजंघ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ष्वेतसंदीव पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥355॥
ॐ ह्रः श्री ष्वेतसंदीव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री यषोधर हैं पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥356॥
ॐ ह्रः श्री यषोधर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुधर्माचार्य पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥357॥
ॐ ह्रः श्री सुधर्माचार्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंदिरस्थविर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥358॥
ॐ ह्रः श्री मंदिरस्थविर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमितगति हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥359॥
ॐ ह्रः श्री अमितगति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयवर्धन हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥360॥
ॐ ह्रः श्री जयवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कल्याणसागर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥361॥
ॐ ह्रः श्री कल्याणसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आत्मप्रकाश पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥362॥
ॐ ह्रः श्री आत्मप्रकाश महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुण्डरीक पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥363॥
ॐ ह्रः श्री पुण्डरीक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अचिंत्य हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।364।।
ॐ ह्र: श्री अचिंत्य महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री विषुद्धबुद्धि पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।365।।
ॐ ह्र: श्री विषुद्धबुद्धि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री महासागर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।366।।
ॐ ह्र: श्री महासागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री अनन्तधर्म पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।367।।
ॐ ह्र: श्री अनन्तधर्म महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अरिदमन हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।368।।
ॐ ह्र: श्री अरिदमन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री शंख हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।369।।
ॐ ह्र: श्री शंख महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री अशंख हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।370।।
ॐ ह्र: श्री अशंख महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री अमोघविजय पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।371।।
ॐ ह्र: श्री अमोघविजय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री भूरिश्रवा पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।372।।
ॐ ह्र: श्री भूरिश्रवा महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री वीरभद्र हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।373।।
ॐ ह्र: श्री वीरभद्र महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री स्तिमित हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।374।।
ॐ ह्र: श्री स्तिमित महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री अयोधन हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।375।।
ॐ ह्र: श्री अयोधन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री सात्यकि पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।376।।
ॐ ह्र: श्री सात्यकि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री विनयदत्त पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।377।।
ॐ ह्र: श्री विनयदत्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री मधु हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।378।।
ॐ ह्र: श्री मधु महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आदित्य हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।379।।
ॐ ह्र: श्री आदित्य महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री अत्रेय हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।380।।
ॐ ह्र: श्री अत्रेय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री वज्रमुष्ठि पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।381।।
ॐ ह्र: श्री वज्रमुष्ठि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री कार्तिकेय पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।382।।
ॐ ह्र: श्री कार्तिकेय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
संकल्पभूषण पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन।।383।।
ॐ ह्र: श्री संकल्पभूषण महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षान्तसागर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥384॥
ॐ ह्ः श्री दीक्षान्तसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अतिशय हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥385॥
ॐ ह्ः श्री अतिशय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री चन्द्रकान्त पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥386॥
ॐ ह्ः श्री चन्द्रकान्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री कालसंदीव पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥387॥
ॐ ह्ः श्री कालसंदीव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री सोमयष हैं पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥388॥
ॐ ह्ः श्री सोमयष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री सोमप्रभ हैं पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥389॥
ॐ ह्ः श्री सोमप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री पूर्वसागर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥390॥
ॐ ह्ः श्री पूर्वसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री अपूर्वसागर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥391॥
ॐ ह्ः श्री अपूर्वसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रतिसूर्य हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥392॥
ॐ ह्ः श्री प्रतिसूर्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री विश्वविलोचन पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥393॥
ॐ ह्ः श्री विश्वविलोचन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभव हैं पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥394॥
ॐ ह्ः श्री संभव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री शम्भू हैं पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥395॥
ॐ ह्ः श्री शम्भू महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री आत्मवान् पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥396॥
ॐ ह्ः श्री आत्मवान् महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री स्वयंज्योति पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥397॥
ॐ ह्ः श्री स्वयंज्योति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री दमीष्वर हैं पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥398॥
ॐ ह्ः श्री दमीष्वर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री अमृतोत्सव पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥399॥
ॐ ह्ः श्री अमृतोत्सव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री हृदयसुदंर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥400॥
ॐ ह्ः श्री हृदयसुदंर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ॥4॥
ॐ ह्रीं चतुर्थशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलय

अर्घ्यावली

दोहा- युधिष्ठरादि ऋषिराज, सौ किए हैं आतम ध्यान।
पुष्पांजलि करते चरण, बारम्बार महान।।

।। पंचम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(मोतियादाम छन्द)

युधिष्ठिर ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।401।।

ॐ ह्रः श्री युधिष्ठिर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गुणप्रभ ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।402।।

ॐ ह्रः श्री गुणप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिप्रिय ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।403।।

ॐ ह्रः श्री शांतिप्रिय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षषांकप्रिय ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।404।।

ॐ ह्रः श्री षषांकप्रिय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुलकीर्ति ऋषी हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।405।।

ॐ ह्रः श्री कुलकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकीर्तिजी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।406।।

ॐ ह्रः श्री सुकीर्तिजी महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धृतियष ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।407।।

ॐ ह्रः श्री धृतियष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलासुत ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।408।।

ॐ ह्रः श्री विमलासुत महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयकुमार ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।409।।

ॐ ह्रः श्री जयकुमार महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंगदेव ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।410।।

ॐ ह्रः श्री गंगदेव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राष्ट्रवर्धन ऋषी हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।411।।

ॐ ह्रः श्री राष्ट्रवर्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रद्युम्न ऋषिवर जी हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।412।।

ॐ ह्रः श्री ऋषिवर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बसन्ततिलक ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।413।।

ॐ ह्रः श्री बसन्ततिलक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धिसागर ऋषी हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।414।।

ॐ ह्रः श्री बुद्धिसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुबेरदत्त ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।415।।

ॐ ह्रः श्री कुबेरदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मनन्दि ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।416।।

ॐ ह्रः श्री ब्रह्मनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रबाहु ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।417।।

ॐ ह्रः श्री भद्रबाहु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यषोविजय ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।418।।
ॐ ह्रः श्री यषोविजय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
महोदधि ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।419।।
ॐ ह्रः श्री महोदधि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मेरूकीर्ति ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।420।।
ॐ ह्रः श्री मेरूकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वासुपूज्य ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।421।।
ॐ ह्रः श्री वासुपूज्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
महेन्द्र ऋषिवर जी हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।422।।
ॐ ह्रः श्री महेन्द्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विक्रान्त ऋषिवर जी हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।423।।
ॐ ह्रः श्री विक्रान्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रत्नमार्ग ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।424।।
ॐ ह्रः श्री रत्नमार्ग महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रत्नचित्र ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।425।।
ॐ ह्रः श्री रत्नचित्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रविनन्दि जी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।426।।
ॐ ह्रः श्री रविनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
राहुमित्र ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।427।।
ॐ ह्रः श्री राहुमित्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राहुभद्र ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।428।।
ॐ ह्रः श्री राहुभद्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अनन्तकीर्ति ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।429।।
ॐ ह्रः श्री अनन्तकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वसुनन्दि ऋषिवर जी हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।430।।
ॐ ह्रः श्री वसुनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रीतिभद्र ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।431।।
ॐ ह्रः श्री प्रीतिभद्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विमलेष्वर ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।432।।
ॐ ह्रः श्री विमलेष्वर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विषालकीर्ति ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।433।।
ॐ ह्रः श्री विषालकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विष्लोचन ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।434।।
ॐ ह्रः श्री विष्लोचन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विष्णुनन्दि ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।435।।
ॐ ह्रः श्री विष्णुनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वीरांगद ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।436।।
ॐ ह्रः श्री वीरांगद महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निष्कम्प ऋषिवर जी हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।437।।
ॐ ह्रः श्री निष्कम्प महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीनिलय ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।438।।
ॐ ह्र: श्री श्रीनिलय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रीविनय ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।439।।
ॐ ह्र: श्री श्रीविनय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रीकान्त जी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।440।।
ॐ ह्र: श्री श्रीकान्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
संवेगभूषण ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।441।।
ॐ ह्र: श्री संवेगभूषण महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आक्रोषविजय ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।442।।
ॐ ह्र: श्री आक्रोषविजय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पात्रकेषरी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।443।।
ॐ ह्र: श्री पात्रकेषरी महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नागकुमार ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।444।।
ॐ ह्र: श्री नागकुमार महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निर्मल जी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।445।।
ॐ ह्र: श्री निर्मल महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दत्तत्रय ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।446।।
ॐ ह्र: श्री दत्तत्रय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्तवकीर्ति ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।447।।
ॐ ह्र: श्री स्तवकीर्ति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकान्त ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।448।।
ॐ ह्र: श्री अनेकान्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वीरभद्र ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।449।।
ॐ ह्र: श्री वीरभद्र महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्वात्मभूत ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।450।।
ॐ ह्र: श्री सर्वात्मभूत महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्वविजय ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।451।।
ॐ ह्र: श्री सर्वविजय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्वोपषम ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।452।।
ॐ ह्र: श्री सर्वोपषम महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निषंक जी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।453।।
ॐ ह्र: श्री निषंक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नहुष जी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।454।।
ॐ ह्र: श्री नहुष महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सौदास जी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।455।।
ॐ ह्र: श्री सौदास महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नागार्जुन ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।456।।
ॐ ह्र: श्री नागार्जुन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नलिनधवज ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।457।।
ॐ ह्र: श्री नलिनधवज महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संग्रामविजय ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।458।।
ॐ ह्रः श्री संग्रामविजय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धर्मभूषण ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।459।।
ॐ ह्रः श्री धर्मभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धर्मदत्त ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।460।।
ॐ ह्रः श्री धर्मदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धनंजय ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।461।।
ॐ ह्रः श्री धनंजय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दधिवाहन ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विशाल।।462।।
ॐ ह्रः श्री दधिवाहन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अवनिपाल ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।463।।
ॐ ह्रः श्री अवनिपाल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
त्रैविद्यदेव ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।464।।
ॐ ह्रः श्री त्रैविद्यदेव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनपालित ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।465।।
ॐ ह्रः श्री जिनपालित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अमरकेतु ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।466।।
ॐ ह्रः श्री अमरकेतु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
षूरसेन ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।467।।
ॐ ह्रः श्री षूरसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋजुमति ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।468।।
ॐ ह्रः श्री ऋजुमति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मृदुमति ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।469।।
ॐ ह्रः श्री मृदुमति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अमृतचंद्र ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।470।।
ॐ ह्रः श्री अमृतचंद्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अरविन्द जी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।471।।
ॐ ह्रः श्री अरविन्द महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
महासेन ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।472।।
ॐ ह्रः श्री महासेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्धसेन ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।473।।
ॐ ह्रः श्री सिद्धसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अष्विनी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।474।।
ॐ ह्रः श्री अष्विनी महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
केसरीसेन ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।475।।
ॐ ह्रः श्री केसरीसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चारुसेन ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।476।।
ॐ ह्रः श्री चारुसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बलदत्त जी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।477।।
ॐ ह्रः श्री बलदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिष्टनेमि ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।478।।
ॐ ह्र: श्री अरिष्टनेमि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धर्मतीर्थ ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।479।।
ॐ ह्र: श्री धर्मतीर्थ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मित्रवीर्य ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।480।।
ॐ ह्र: श्री मित्रवीर्य महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सत्यवीर्य ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।481।।
ॐ ह्र: श्री सत्यवीर्य महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्वजनानंद ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।482।।
ॐ ह्र: श्री सर्वजनानंद महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्वगुप्त ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।483।।
ॐ ह्र: श्री सर्वगुप्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जितषत्रु जी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।484।।
ॐ ह्र: श्री जितषत्रु महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पद्मसुंदर ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।485।।
ॐ ह्र: श्री पद्मसुंदर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पद्मनन्दि ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।486।।
ॐ ह्र: श्री पद्मनन्दि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पद्मकीर्ति ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।487।।
ॐ ह्र: श्री पद्मकीर्ति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मनाभ ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।488।।
ॐ ह्र: श्री पद्मनाभ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पद्मराज ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।489।।
ॐ ह्र: श्री पद्मराज महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पद्माकर ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।490।।
ॐ ह्र: श्री पद्माकर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पुण्यमित्र ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।491।।
ॐ ह्र: श्री पुण्यमित्र महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभाचन्द्र ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।492।।
ॐ ह्र: श्री प्रभाचन्द्र महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रियदर्शन ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।493।।
ॐ ह्र: श्री प्रियदर्शन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बुद्धिकीर्ति ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।494।।
ॐ ह्र: श्री बुद्धिकीर्ति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बिन्दुसागर ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।495।।
ॐ ह्र: श्री बिन्दुसागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बिन्दुसार ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।496।।
ॐ ह्र: श्री बिन्दुसार महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कुणाल जी ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।497।।
ॐ ह्र: श्री कुणाल महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिम्बसार ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विशाल।।498।।
ॐ ह्र: श्री बिम्बसार महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वररूचि ऋषिवर जी हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।499।।
ॐ ह्र: श्री वररूचि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ब्रह्मरूचि ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विषाल।।500।।
ॐ ह्र: श्री ब्रह्मरूचि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ।।5।।
ॐ ह्रीं पंचशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टम् वलय:

अर्घ्यावली

दोहा- पराषर आदिक ऋषी, सहन किए उपसर्ग।
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने हम अपवर्ग।।
।। पष्टम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।
(चाल छन्द)
ऋषि पाराषर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।501।।
ॐ ह्र: श्री पराषर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि भुवनकीर्ति कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।502।।
ॐ ह्र: श्री भुवनकीर्ति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर मणिभद्र कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।503।।
ॐ ह्र: श्री मणिभद्र महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर मघवान कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।504।।
ॐ ह्र: श्री मघवान महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिराज सुकौषल गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।505।।
ॐ ह्र: श्री ऋषिराज महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि विद्युच्चर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।506।।
ॐ ह्र: श्री विद्युच्चर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर दण्डक कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।507।
ॐ ह्र: श्री दण्डक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर चाणक कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।508।।
ॐ ह्र: श्री चाणक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर नि:षुम्भु कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।509।।
ॐ ह्र: श्री नि:षुम्भु महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि देवगुरु कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।510।।
ॐ ह्र: श्री देवगुरु महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि चन्द्रगुप्त कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।511।।
ॐ ह्र: श्री चन्द्रगुप्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि विपुलवाहन कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।512।।
ॐ ह्र: श्री विपुलवाहन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर शुचिदत्त कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते।।513।।
ॐ ह्र: श्री शुचिदत्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि षुद्धाभदेव कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥514॥

ॐ ह्रः श्री षुद्धाभदेव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज शुभंकर गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥515॥

ॐ ह्रः श्री शुभंकर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि धर्मसिंह कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥516॥

ॐ ह्रः श्री धर्मसिंह महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सन्मतिकीर्ति कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥517॥

ॐ ह्रः श्री सन्मतिकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज स्वयंवर गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥518॥

ॐ ह्रः श्री स्वयंवर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज हेमरथ गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥519॥

ॐ ह्रः श्री हेमरथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि नाभिनंदन कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥520॥

ॐ ह्रः श्री नाभिनंदन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुषेण कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥521॥

ॐ ह्रः श्री सुषेण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सुरेन्द्रदत्त कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥522॥

ॐ ह्रः श्री सुरेन्द्रदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि पद्मोत्तर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥523॥

ॐ ह्रः श्री पद्मोत्तर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अपराजित कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥524॥

ॐ ह्रः श्री अपराजित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि स्वर्णनाभ कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥525॥

ॐ ह्रः श्री स्वर्णनाभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर यतिवृषभ कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥526॥

ॐ ह्रः श्री यतिवृषभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज अनंत कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥527॥

ॐ ह्रः श्री अनंत महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज नलिनप्रभ गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥528॥

ॐ ह्रः श्री नलिनप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज सुनंदन गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥529॥

ॐ ह्रः श्री सुनंदन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सूर्यप्रभ कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥530॥

ॐ ह्रः श्री सूर्यप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अर्हन्नन्दन कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥531॥

ॐ ह्रः श्री अर्हन्नन्दन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि कृतवर्मा कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥532॥

ॐ ह्रः श्री कृतवर्मा महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि इन्द्रकीर्ति कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥533॥

ॐ ह्रः श्री इन्द्रकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि पूज्यपाद कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥534॥

ॐ ह्र: श्री पूज्यपाद महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर दमवर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥535॥

ॐ ह्र: श्री दमवर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुदृष्टि कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥536॥

ॐ ह्र: श्री सुदृष्टि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर दृढ़व्रत कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥537॥

ॐ ह्र: श्री दृढ़व्रत महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि जटानन्दि कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥538॥

ॐ ह्र: श्री जटानन्दि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज सुमुख कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥539॥

ॐ ह्र: श्री सुमुख महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज महीजय गाए, जो जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥540॥

ॐ ह्र: श्री महीजय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर महाद्युति कहलाए, जो जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥541॥

ॐ ह्र: श्री महाद्युति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि प्रकृतिद्युति कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥542॥

ॐ ह्र: श्री प्रकृतिद्युति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि जयत्नकुमार कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥543॥

ॐ ह्र: श्री जयत्नकुमार महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अतिरथ कहलाए, जो जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥544॥

ॐ ह्र: श्री अतिरथ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर षतधनु कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥545॥

ॐ ह्र: श्री षतधनु महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर शान्तनु कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥546॥

ॐ ह्र: श्री शान्तनु महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि चन्द्रवर्मा कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥547॥

ॐ ह्र: श्री चन्द्रवर्मा महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज अकल्पित गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥548॥

ॐ ह्र: श्री अकल्पित महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज प्रकल्पित गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥549॥

ॐ ह्र: श्री प्रकल्पित महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि हिरण्यनाभ कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥550॥

ॐ ह्र: श्री हिरण्यनाभ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अनावृष्टि कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥551॥

ॐ ह्र: श्री अनावृष्टि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि विज्ञानसागर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥552॥

ॐ ह्र: श्री विज्ञानसागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि परमार्थसागर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥553॥

ॐ ह्र: श्री परमार्थसागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि चारित्रसागर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥554॥

ॐ ह्र: श्री चारित्रसागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि प्रषमसागर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥555॥

ॐ ह्र: श्री प्रषमसागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि प्रसन्नसागर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥556॥

ॐ ह्र: श्री प्रसन्नसागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि आनंदसागर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥557॥

ॐ ह्र: श्री आनंदसागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि क्षमासागर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥558॥

ॐ ह्र: श्री क्षमासागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि प्रमेयसागर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥559॥

ॐ ह्र: श्री प्रमेयसागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि उत्कर्षसागर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥560॥

ॐ ह्र: श्री उत्कर्षसागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर षषिप्रभ कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥561॥

ॐ ह्र: श्री षषिप्रभ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर खण्डक कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥562॥

ॐ ह्र: श्री खण्डक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि चित्रंगद कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥563॥

ॐ ह्र: श्री चित्रंगद महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सत्यसत्व कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥564॥

ॐ ह्र: श्री सत्यसत्व महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर वृहद्बलि कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥565॥

ॐ ह्र: श्री वृहद्बलि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अमितसागर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥566॥

ॐ ह्र: श्री वृहद्बलि महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर पुण्याह कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥567॥

ॐ ह्र: श्री पुण्याह महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि कृतवर्मा कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥568॥

ॐ ह्र: श्री कृतवर्मा महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज पणिक कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥569॥

ॐ ह्र: श्री पाणिक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि कर्मवीरजय गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥570॥

ॐ ह्र: श्री कर्मवीरजय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि प्रकाशदीप्त कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥571॥

ॐ ह्र: श्री प्रकाशदीप्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि ऋषिसन्तानक कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥572॥

ॐ ह्र: श्री ऋषिसन्तानक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि पुण्यजिनेष्वर गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥573॥

ॐ ह्र: श्री पुण्यजिनेष्वर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर सुरार्चित कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥574॥

ॐ ह्र: श्री सुरार्चित महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि विद्याधर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥575॥

ॐ ह्र: श्री विद्याधर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अनुगामी कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥576॥

ॐ ह्र: श्री अनुगामी महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि धर्मप्रतिपाल गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥577॥

ॐ ह्र: श्री धर्मप्रतिपाल महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि महाश्रमण कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥578॥

ॐ ह्र: श्री महाश्रमण महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि पुण्याभ कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥579॥

ॐ ह्र: श्री पुण्याभ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अनुभव जी कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥580॥

ॐ ह्र: श्री अनुभव महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अनुपम जी कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥581॥

ॐ ह्र: श्री अनुपम महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सुमनस कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥582॥

ॐ ह्र: श्री सुमनस महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि दृष्टिपूत कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥583॥

ॐ ह्र: श्री दृष्टिपूत महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर प्रियवंद कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥584॥

ॐ ह्र: श्री प्रियवंद महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि नयकीर्ति कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥585॥

ॐ ह्र: श्री नयकीर्ति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सम्प्रेरक कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥586॥

ॐ ह्र: श्री सम्प्रेरक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि उदारचित्त कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥587॥

ॐ ह्र: श्री उदारचित्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि नित्यचित्र कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥588॥

ॐ ह्र: श्री नित्यचित्र महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर कुलन्धर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥589॥

ॐ ह्र: श्री कुलन्धर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि प्रक्षालक कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥590॥

ॐ ह्र: श्री प्रक्षालक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर ऋजुम्भर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥591॥

ॐ ह्र: श्री ऋजुम्भर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि ऋजुप्रज्ञ कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥592॥

ॐ ह्र: श्री ऋजुप्रज्ञ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अन्तर्प्रज्ञ कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥593॥

ॐ ह्र: श्री अन्तर्प्रज्ञ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर बोधितबुद्ध कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥594॥

ॐ ह्रः श्री बोधितबुद्ध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि ऋषिमन्यु कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥595॥

ॐ ह्रः श्री ऋषिमन्यु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर अपवर्ग कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥596॥

ॐ ह्रः श्री अपवर्ग महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि भूरिविक्रम कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥597॥

ॐ ह्रः श्री भूरिविक्रम महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सहस्रबल जी कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥598॥

ॐ ह्रः श्री सहस्रबल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि षतबल जी कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥599॥

ॐ ह्रः श्री षतबल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि ब्रह्मगुलाल कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥600॥

ॐ ह्रः श्री ब्रह्मगुलाल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ॥6॥

ॐ ह्रीं षष्टशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति

दोहा- भक्ति प्रवण आदिक ऋषी, जग में हुए महान।
पुष्पांजलि करके विशद, करते हम गुणगान॥

॥शान्तये शांतिधारा॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

सप्तम् वलयः

अर्घ्यावली

॥ सप्तम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(वेसरी छन्द)

भक्तिप्रवण ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥601॥

ॐ ह्रः श्री भक्तिप्रवण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूतिवाहन ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥602॥

ॐ ह्रः श्री पूतिवाहन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवित्रयष ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥603॥

ॐ ह्रः श्री पवित्रयष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवर्धक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥604॥

ॐ ह्रः श्री प्रवर्धक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधमर्धक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥605॥

ॐ ह्रः श्री अधमर्धक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्तिक्य ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥606॥

ॐ ह्रः श्री आस्तिक्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मवररसिक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥607॥

ॐ ह्रः श्री धर्मवररसिक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहिष्णु ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥608॥

ॐ ह्रः श्री सहिष्णु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तुतिधर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥609॥

ॐ ह्र: श्री स्तुतिधर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतिधर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥610॥

ॐ ह्र: श्री श्रुतिधर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विचक्षण ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥611॥

ॐ ह्र: श्री विचक्षण महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्थक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥612॥

ॐ ह्र: श्री सार्थक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रमत्त ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥613॥

ॐ ह्र: श्री अप्रमत्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥614॥

ॐ ह्र: श्री अविचल महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धैर्य ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥615॥

ॐ ह्र: श्री धैर्य महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिजित् ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥616॥

ॐ ह्र: श्री अभिजित् महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्वेषक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥617॥

ॐ ह्र: श्री अन्वेषक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यज्योर्ति ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥618॥

ॐ ह्र: श्री दिव्यज्योर्ति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशान्तकषाय ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥619॥

ॐ ह्र: श्री प्रशान्तकषाय महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिप्रवर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥620॥

ॐ ह्र: श्री ऋषिप्रवर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनध ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥621॥

ॐ ह्र: श्री अनध महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्योर्ति ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥622॥

ॐ ह्र: श्री केवलज्योर्ति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणुमान् ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥623॥

ॐ ह्र: श्री अणुमान् महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यषवन्त ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥624॥

ॐ ह्र: श्री यषवन्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयवन्त ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥625॥

ॐ ह्र: श्री जयवन्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिम ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥626॥

ॐ ह्र: श्री महिम महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्णव ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥627॥

ॐ ह्र: श्री महार्णव महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमिताभ ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥628॥

ॐ ह्र: श्री अमिताभ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयमप्रकाश ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥629॥॥
ॐ ह्रः श्री संयमप्रकाश महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तपसागर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥630॥
ॐ ह्रः श्री तपसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षोम्य ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥631॥
ॐ ह्रः श्री अक्षोम्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अमृतप्रभव ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥632॥
ॐ ह्रः श्री अमृतप्रभव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वज्रकुमार ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥633॥
ॐ ह्रः श्री वज्रकुमार महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मतिवर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥634॥
ॐ ह्रः श्री मतिवर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वरांग ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥635॥
ॐ ह्रः श्री वरांग महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकलंक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥636॥
ॐ ह्रः श्री अकलंक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बालि ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥637॥
ॐ ह्रः श्री ऋषिवर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रत्नायुध ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥638॥
ॐ ह्रः श्री रत्नायुध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रचूल ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥639॥
ॐ ह्रः श्री चन्द्रचूल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्योतिष्प्रभ ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥640॥
ॐ ह्रः श्री ज्योतिष्प्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अतिशयमति ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥641॥
ॐ ह्रः श्री अतिशयमति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अलकसुंदर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥642॥
ॐ ह्रः श्री अलकसुंदर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अमृतरसायन ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥643॥
ॐ ह्रः श्री अमृतरसायन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कनकरथ ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥644॥
ॐ ह्रः श्री कनकरथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गोवर्द्धन ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥645॥
ॐ ह्रः श्री गोवर्द्धन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गौतम ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥646॥
ॐ ह्रः श्री गौतम महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आर्यनंदि ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥647॥
ॐ ह्रः श्री आर्यनंदि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कृपाचार्य ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥648॥
ॐ ह्रः श्री कृपाचार्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृपवर्मा ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥649॥

ॐ ह्रः कृपवर्मा श्री महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगननन्दन ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥650॥

ॐ ह्रः श्री गगननन्दन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महानंद ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥651॥

ॐ ह्रः श्री महानंद महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृढ़वर्मा ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥652॥

ॐ ह्रः श्री दृढ़वर्मा महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वसमुद्ध ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥653॥

ॐ ह्रः श्री सर्वसमुद्ध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगदत्त ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥654॥

ॐ ह्रः श्री भगदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनगार ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥655॥

ॐ ह्रः श्री अनगार महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मदनसुंदर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥656॥

ॐ ह्रः श्री मदनसुंदर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नशेखर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥657॥

ॐ ह्रः श्री रत्नशेखर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवसुदंर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥658॥

ॐ ह्रः श्री शिवसुंदर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदास ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥659॥

ॐ ह्रः श्री जिनदास महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मीधर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥660॥

ॐ ह्रः श्री लक्ष्मीधर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुवर्ती ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥661॥

ॐ ह्रः श्री अनुवर्ती महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधविमुक्त ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥662॥

ॐ ह्रः श्री अधविमुक्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मपुत्र ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥663॥

ॐ ह्रः श्री धर्मपुत्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनिन्दित ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥664॥

ॐ ह्रः श्री अनिन्दित महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनिन्द्य ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥665॥

ॐ ह्रः श्री अनिन्द्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्यनिष्ठ ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥666॥

ॐ ह्रः श्री सत्यनिष्ठ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षवाक् ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥667॥

ॐ ह्रः श्री दक्षवाक् महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुषाक् ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥668॥

ॐ ह्रः श्री कुषाक् महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाविभूति ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥669॥

ॐ ह्र: श्री महाविभूति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुसौम्य ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥670॥

ॐ ह्र: श्री सुसौम्य महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ओजस्वी ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥671॥

ॐ ह्र: श्री ओजस्वी महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्जस्व ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥672॥

ॐ ह्र: श्री ऊर्जस्व महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्जयन्त ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥673॥

ॐ ह्र: श्री ऊर्जयन्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकाग्र ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥674॥

ॐ ह्र: श्री एकाग्र महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलप्रभ ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥675॥

ॐ ह्र: श्री विमलप्रभ महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वरूपानंद ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥676॥

ॐ ह्र: श्री स्वरूपानंद महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यानंद ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥677॥

ॐ ह्र: श्री विद्यानंद महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मानंद ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥678॥

ॐ ह्र: श्री ब्रह्मानंद महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मयानंद ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥679॥

ॐ ह्र: श्री चिन्मयानंद महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करुणासागर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥680॥

ॐ ह्र: श्री करुणासागर महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निकलंक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥681॥

ॐ ह्र: श्री निकलंक महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्वभूषण ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥682॥

ॐ ह्र: श्री सम्यक्तवभूषण महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललितांग ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥683॥

ॐ ह्र: श्री गगननन्दन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मदनकीर्ति ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥684॥

ॐ ह्र: श्री मदनकीर्ति महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोभव ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥685॥

ॐ ह्र: श्री गगननन्दन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्यकान्त ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥686॥

ॐ ह्र: श्री सूर्यकान्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रकान्त ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥687॥

ॐ ह्र: श्री चन्द्रकान्त महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रलोचन ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥688॥

ॐ ह्र: श्री वज्रलोचन महामुनये नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांससागर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥689॥

ॐ ह्रः श्री श्रेयांससागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षितिपाल ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥690॥

ॐ ह्रः श्री क्षितिपाल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगेन्द्र ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥691॥

ॐ ह्रः श्री योगेन्द्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मबोध ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥692॥

ॐ ह्रः श्री आत्मबोध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाशय ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥693॥

ॐ ह्रः श्री महाशय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वहितंकर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥694॥

ॐ ह्रः श्री सर्वहितंकर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासव ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥695॥

ॐ ह्रः श्री वासव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिसागर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥696॥

ॐ ह्रः श्री मल्लिसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यतीतशोक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥697॥

ॐ ह्रः श्री व्यतीतशोक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणसागर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥698॥

ॐ ह्रः श्री निर्वाणसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कषाय ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥699॥

ॐ ह्रः श्री निष्कषाय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यम ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥700॥

ॐ ह्रः श्री यम महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ॥7॥

ॐ ह्रीं सप्तशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति

जाप्य ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यादिक सप्तशत मुनिवरेभ्यो नमः

समुच्चय जयमाला

दोहा **वात्सल्य का पर्व यह, जग में मंगलकार।**
गाते हैं जयमालिका, करके जय जयकार॥

(चौबोला छन्द)

उज्जयिनी के नृप श्री वर्मा, के मंत्री थे चार विशेष।
बलि, प्रहलाद, बृहस्पति, नमुचि, मिथ्यावादी रहे अशेष॥
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक थे बहुगुणवान।
दर्शन करके नृप श्री वर्मा, प्रमुदित मन में हुआ महान्॥
अशुभ निमित्त जानकर गुरु ने, मौन का दीन्हा था आदेश।
शिरोधार्य करके मुनियों ने, पालन कीन्हा जिसे विशेष॥
श्रुत सागर मुनि सुन न पाए, जो थे ज्ञानी श्रेष्ठ महान्।
चर्या करके लौट रहे थे, मंत्री करते तब अपमान॥
अज्ञानी होते मुनि सारे, जानें क्या तत्त्वों का सार।
सुनकर मुनि मंत्री से बोले, तुम क्यों करते गलत प्रचार॥
वाद-विवाद हुआ मुनिवर से, सारे मंत्री माने हार।
अपमानित होकर रात्रि में, मुनि पर कीन्हे खड्गप्रहार॥

कीलित किया क्षेत्र रक्षक ने, सर्व मंत्रियों को उस हाल।
राजा ने क्रोधित हो करके, दीन्हा क्षण में देश निकाल॥
हस्तिनागपुर पहुँचे मंत्री, पद्मराय राजा के पास।
सर्व मंत्रियों ने मिलकर के, शत्रु दल का किया विनाश॥
तभी मंत्रियों को मुँह मांगा, राजा ने दीन्हा वरदान।
जब चाहेंगे ले लेंगे हम, वचन लिए राजा ने मान॥
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, करके पहुँचे वहाँ विहार।
संघ देख मंत्रिन् के मन में, भय का रहा न कोई पार॥
कुटिल भाव से मंत्री पहुँचे, पद्मराय नृप के दरबार।
अष्ट दिवस का राज्य दीजिए, मानेंगे हम सब आभार॥
भीषण आग जलाए मंत्री, यज्ञ रचाए विविध प्रकार।
दान किमिच्छित देते सबको, कीन्हा चारों ओर प्रचार॥
धरणी भूषण पर्वत पर मुनि, श्रुतसागर करते थे ध्यान।
कम्पित देख गगन में तारा, मुनि को आश्चर्य हुआ महान्॥
मुनियों पर उपसर्ग हुआ है, मुनि को हुआ था ये आभास॥
श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धि मुनिवर, तप से सिद्ध हुई है खास।
यह उपसर्ग आपके द्वारा, हो सकता है पूर्ण विनाश॥
हस्तिनागपुर पहुँचे मुनिवर, वात्सल्य का भाव विचार।
बटुक विप्र का भेष धारकर, मुनि पहुँचे करने उपकार॥
बलि आदि मंत्री के आगे, बटुक ने माँगा यह वरदान।
तीन पैढ़ भूमि दो हमको, तुम हो दानी श्रेष्ठ महान्॥
वचन बद्ध करके मंत्री को, मुनिवर ने फिर रक्खा पैर।
दो पग में सब धरती मापी, तीजे की अब रही न खैर॥
बलि आदि मंत्री झुक जाते, मुनिवर के चरणों में आन।
हमें क्षमा कर दो हे मुनिवर, हमसे गलति हुई महान्॥
विष्णु कुमार मुनि की बोले, प्राणी सारे जय-जयकार।
करके यह उपसर्ग दूर गुरु, कीन्हा है हम पर उपकार॥
नशते ही उपसर्ग सभी ने, मुनियों को दीन्हा आहार।
बलि आदि भी मुनि संघ की, भाव सहित बोले जयकार॥
रक्षासूत्र बाँध हाथों में, सबने कीन्हा यही विचार।
धर्म की रक्षा कर हमको भी, करना है जग का उपकार॥

साधर्मी से वात्सल्य का, भाव जगायेंगे हम लोग।
कहीं किसी भी रूप में हमको, मिले धर्म का जब संयोग॥
श्रावण शुक्ला पूनम का दिन, पर्व बना यह मंगलकार।
वात्सल्य का है प्रतीक जो, सम्यक् दर्शन का आधार॥
विष्णु कुमार मुनि ने फिर से, व्रत कीन्हें थे अंगीकार॥
कर्मों की सेना के ऊपर, कीन्हा मुनिवर ने अधिकार॥
मुनियों ने कीन्हा तप भारी, निज परिणामों के अनुसार।
कर्म नाशकर कर स्वर्ग मोक्ष पद, पाये मुनिवर अपरम्पार॥
धर्म भावना जगे हृदय में, पाप रहे हमसे अतिदूर।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, से हृदय भरे मेरा भरपूर॥
रक्षा बन्धन पर्व धर्म की, रक्षा का त्यौहार महान्।
'विशद' भाव से करते हैं हम, मुनियों का अतिशय गुणगान।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक के चरण नमन्।
हैं उपसर्ग निवारक महामुनि, विष्णु कुमार के पद वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनिभ्या जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा वात्सल्य का पर्व यह, रक्षाबन्धन नाम।
जिन मुनियों के चरण में, बारम्बार प्रणाम॥

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्तान्तर्ग श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन उस्मानपुर दिल्ली मासोत्तम मासे शुभे मासे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे एकम रविवासरे श्री रक्षाबन्धन विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

रक्षाबन्धन विधान चालीसा

रक्षाबन्धन विधान की आरती

तर्ज भक्ती बेकरार है...

गुरुवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
मुनि अकम्पनाचार्य आदि की, हो रही जय जयकार है।टेक।।

घृत का दीप जलाकर लाए, श्री मुनिवर के द्वार जी-2
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी-2
गुरुवर का.....।।1।।

श्री अकम्पनाचार्य आदि शुभ, सप्त शतक मुनिवर ज्ञानी-2
धर्म साधना करने वाले, पावन थे जो कल्याणी-2
गुरुवर का.....।।2।।

नगर हस्तिनापुर में जाके, पावन ध्यान लगाए थे-2
बलि आदिक मंत्री मुनियों से, मन में वैर बनाए थे-2
गुरुवर का.....।।3।।

जिनके ऊपर मंत्री छल से, बहु उपसर्ग कराए थे-2
विष्णु कुमार मुनी ऋद्धी से, वह उपसर्ग नशाए थे-2
गुरुवर का.....।।4।।

तब से चैत शुक्ल पूनम को, यह त्यौहार मनाते हैं-2
रक्षासूत्र बाँध के कर में, वात्सल्य दिखलाते हैं-2
गुरुवर का.....।।5।।

आचार्य श्री विशदसागर जी द्वारा रचित 182 विधानों की विशाल श्रृंखला पर्वों के दिनों में करने योग्य विधान

1. श्री आदिनाथ मण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ मण्डल विधान
3. श्री सम्भवनाथ मण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ मण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ मण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभु मण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु विधान
9. श्री पुष्पदन्त विधान
10. श्री शीतलनाथ विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ विधान
12. श्री वासुपूज्य विधान
13. श्री विमलनाथ विधान
14. श्री अनन्तनाथ विधान
15. श्री धर्मनाथ विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री कुंथुनाथ विधान
18. श्री अरहनाथ विधान
19. श्री मल्लिनाथ विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
21. श्री नमिनाथ विधान
22. श्री नेमिनाथ विधान
23. श्री पार्श्वनाथ विधान
24. श्री महावीर विधान
25. पंच परमेष्ठी विधान
26. णमोकार मण्डल विधान
27. भक्तामर मण्डल विधान
28. सम्मेद शिखर विधान
29. श्रुत स्कंध विधान
30. याग मण्डल विधान
31. पंचकल्याणक विधान
32. त्रिकाल चौबीसी विधान
33. कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. पंचमेरु विधान
37. लघु नन्दीश्वर विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. ऋषिमण्डल विधान
42. विषापहार स्त्रोत विधान
43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विधान
44. वास्तु मण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांतिमण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्ट निवारक श्री पदमप्रभु विधान
47. चौंसठ ऋद्धि विधान
48. कर्मदहन मण्डल विधान
49. लघु नवदेवतर विधान
50. सहस्त्रनाम विधान
51. चारित्र लब्धी विधान
52. अनन्त व्रतमण्डल विधान
53. कालसर्प योग निवारक विधान
54. शनि अरष्टि निवारक विधान
55. आचार्य परमेष्ठी विधान
56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान
57. सरस्वती विधान
58. विशद महाअर्चना विधान
59. कल्याण मंदिर विधान (बड़ागांव)
60. अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
61. अर्हतनाम विधान
62. सम्यक् आराधना विधान
63. मृत्युंजय विधान
64. शांति प्रदायक शांति विधान
65. लघु मृत्युंजय विधान
66. जम्बूद्वीप विधान
67. चारित्र शुद्धीव्रत विधान
68. क्षायिक नव लब्धी विधान
69. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
70. गोम्मटेश बाहुबली विधान
71. निर्वाण क्षेत्र विधान
72. तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
73. त्रैलोक्य मण्डल विधान
74. पुण्यास्त्रव विधान
75. सप्तऋषि विधान
76. श्री शांति कुंथु अरहनाथ विधान
77. श्रावक व्रत दोष
78. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
79. सम्यक् दर्शन विधान
80. श्रुत ज्ञान व्रत विधान
81. चारित्र शुद्धिव्रत विधान (जाप्य)
82. मनोकामना पूर्णशांति विधान
83. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
84. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
85. विजयश्री विधान
86. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
87. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
88. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
89. षट् खण्डागम विधान
90. दिव्य देशना विधान
91. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
92. नवग्रह शांति विधान
93. रक्षाबन्धन विधान
94. तीर्थंकर विधान
95. गणधरवलय विधान (लघु)
96. गिरनार गिरि विधान
97. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)
98. ऋषिमण्डल विधान (द्वितीय)
99. कालसर्प दोष निवारक कल्याण मंदिर
100. वास्तु विधान (द्वितीय)
101. भक्तामर विधान (चोपाई)
102. पद्मावती विधान
103. 96 क्षेत्रफल विधान
104. बड़े बाबा विधान
105. कल्पद्रुम विधान (लघु)
106. केवल्यलक्ष्मी प्राप्ति विधान
107. महावीर समवशरण विधान
108. चान्दनपुर महावीर विधान
109. श्री शांति विधान (शांतिनाथ खोह)
110. श्री पार्श्वनाथ विधान (खण्डेला)
111. सुगन्ध दशमी विधान
112. कर्म निर्झरव्रत विधान
113. निर्दुख सप्तमी व्रत विधान
114. रविव्रत पूजा विधान
115. सौभाग्यदशमी व्रत विधान
116. पुरन्दर विधान
117. रोहिणी व्रत विधान
118. अनन्त वीर्य केवली विधान
119. मौन एकादशी व्रत विधान
120. सुख सम्पति व्रत विधान
121. चन्दन षष्ठीव्रत विधान
122. श्री पार्श्वनाथ विधान (निमोला)
123. श्री पार्श्वनाथ विधान (गंभीरा)
124. यागमण्डल विधान (लघु)
125. चारित्र शुद्धि विधान (वृहद)
126. अष्टान्हिका विधान (वृहद)
127. चौबीस तीर्थंकर विधान (वृहद)
128. नवदेवता विधान (वृहद)
129. ऋषि मण्डल विधान (वृहद)
130. नवगृहशांति विधान (वृहद)
131. पंच बालयति विधान (वृहद)
132. तत्वार्थ सूत्र विधान (वृहद)
133. सहस्त्र नाम विधान (वृहद)
134. नन्दीश्वर विधान (वृहद)
135. महामृत्युंजय विधान (वृहद)
136. दशलक्षण विधान (वृहद)
137. रत्नत्रय विधान (वृहद)
138. सिद्धचक्र विधान (वृहद)
139. अभिनवकल्पतरू विधान (वृहद)
140. समवशरण विधान (वृहद)
141. इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
142. धर्मचक्र विधान (वृहद)
143. अर्हत् महिमा विधान (वृहद)
144. विदेह क्षेत्र विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान (वृहद)
145. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान (वृहद)
146. तीन लोक विधान (वृहद)
147. सोलहकारण भावना विधान (वृहद)
148. गणधर वलय विधान (वृहद)
149. चौबीस तीर्थंकर निर्वाण भक्ति विधान (वृहद)
150. चौबीस तीर्थंकर विधान (द्वितीय) (वृहद)
151. कल्पद्रुम विधान
152. चौसठ ऋद्धि विधान (लघु)
153. (कांजीबारस) श्रावण द्वादशी विधान
154. चूलगिरि विधान
155. पंचपरमेष्ठी विधान
156. तीस चौबीस विधान
157. आकाश पंचमी विधान
158. पुष्पांजलि विधान
159. नवनिधि विधान
160. साप्ताहिक सप्त विधान
161. पल्य विधान
162. शांतिभक्ति विधान
163. आ. श्रीविराग सागर विधान
164. चैत्य भक्ति विधान
165. श्री ऋषभदेव विधान
166. रत्नत्रय विधान
167. रक्षाबन्धन विधान
168. ऋद्धि सिद्धि विधान
169. भरत केवली विधान
170. सर्वतोभद्र विधान
171. शांतिविधान (सर्वोदयतीर्थ)
172. आदिनाथ विधान (अष्टापद)
173. ऋषभदेव विधान (नजफगढ़)
174. सैंतालिश भक्ति विधान
175. शांति विधान (तिजारा)
176. पंचकल्याणक विधान (लघु)
177. महावीर पंचकल्याणक विधान
178. श्री योगसार विधान
179. गणधर वलय विधान (लघु)
180. देहरा तिजारा चन्द्रप्रभु विधान (लघु)
181. जम्बू स्वामी विधान
182. जैनत्व संस्कार विधान

संकलन प्रयास : मुनि श्री विशालसागर जी महाराज